

साप्ताहिक

समस्यात्मक

UPSC, PCS और अन्य परीक्षाओं के लिए
प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

17 FEB - 22 FEB, 2025
wisdomias.co.in

भारत में डिजिटल सामग्री पर सेंसरशिप:
अभिव्यक्ति और नियंत्रण के बीच संतुलन

विकेंद्रीकरण और पंचायती राज प्रणाली
शहरी चिपको आंदोलन: पर्यावरण संरक्षण की नई दिशा
RUTAGE स्मार्ट विलेज सेंटर: ग्रामीण विकास में तकनीकी नवाचार
दिल्ली भूकंप: कारण, प्रभाव और जोखिम

1. भारत और हिंद महासागर: रणनीतिक महत्व और विकसित होती भूमिका

समाचार: विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने भारतीय महासागर क्षेत्र (IOR) में स्थिरता और सहयोग को बढ़ाने के लिए एक "समन्वित नौसैनिक बेड़े" की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने इस क्षेत्र में बढ़ती भू-राजनीतिक प्रतिस्पर्धा और सुरक्षा चुनौतियों को रेखांकित किया।

भारतीय महासागर: एक परिचय

- **भौगोलिक विस्तार:** भारतीय महासागर दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा महासागर है, जो 9,600 किमी (बंगाल की खाड़ी से अंटार्कटिका तक) और 7,800 किमी (दक्षिण अफ्रीका से पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया तक) फैला हुआ है। इसकी तटरेखा लगभग 70,000 किमी लंबी है।
- **जनसांख्यिकी:** यह महासागर क्षेत्र विश्व की 35% जनसंख्या और 40% वैश्विक तटरेखा को समेटे हुए है।
- **ऐतिहासिक महत्व:** भारतीय महासागर प्राचीन काल से ही एक महत्वपूर्ण व्यापार मार्ग रहा है। इसने यूरोप, एशिया और अफ्रीका के बीच **सिल्क रूट** और मसाला व्यापार को सुगम बनाया।

रणनीतिक महत्व

भारतीय महासागर दुनिया के कुछ सबसे महत्वपूर्ण **समुद्री चोकप्वाइंट्स** (Maritime chokepoints) को नियंत्रित करता है। भारत की केंद्रीय स्थिति इसे रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण बनाती है:

- **हार्मुज जलडमरूमध्य** (ईरान-ओमान): वैश्विक तेल व्यापार के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण।
- **बाब अल-मंदेब** (यमन-जिबूती): रेड सी और स्वेज नहर तक पहुंच का प्रमुख मार्ग।
- **मलक्का जलडमरूमध्य** (इंडोनेशिया-मलेशिया): पूर्वी एशिया के व्यापार के लिए महत्वपूर्ण समुद्री गलियारा।

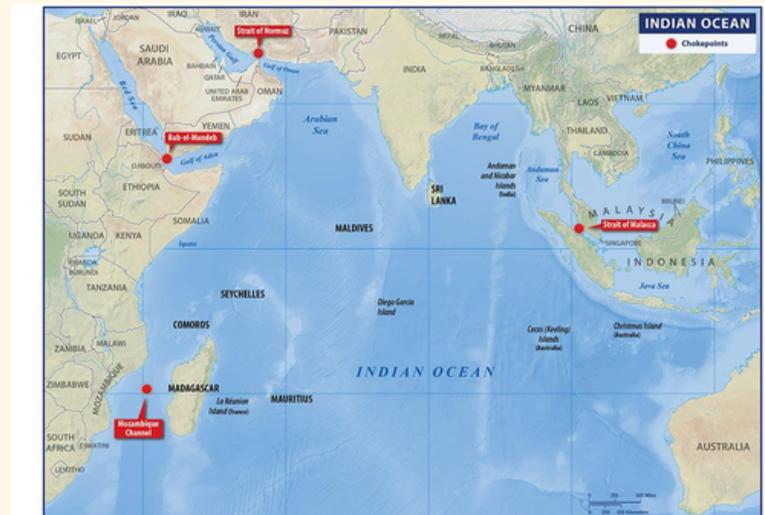
भारतीय महासागर क्षेत्र की प्रमुख चुनौतियाँ

- **समुद्री सुरक्षा:** सोमालिया और अदन की खाड़ी के पास समुद्री डकैती और तस्करी की घटनाएँ बढ़ रही हैं।
- **आर्थिक और पर्यावरणीय समस्याएँ:** अत्यधिक मछली पकड़ने से समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र को खतरा। गहरे समुद्र में खनन से पर्यावरणीय असंतुलन।

- **जलवायु परिवर्तन:** समुद्र स्तर में वृद्धि छोटे द्वीपीय देशों के अस्तित्व को खतरे में डाल सकती है।
- **मानवीय संकट:** चक्रवात, सुनामी और तेल रिसाव जैसी प्राकृतिक आपदाएँ इस क्षेत्र में आम हैं।
- **भू-राजनीतिक प्रतिस्पर्धा:** अमेरिका, चीन, यूके और फ्रांस के बीच **प्रभाव क्षेत्र** को लेकर संघर्ष।

भारत की नीति और रणनीतिक पहल: भारत ने भारतीय महासागर क्षेत्र में अपनी राजनयिक, आर्थिक और सुरक्षा भागीदारी को मजबूत करने के लिए कई पहल की हैं:

- **भारतीय महासागर सम्मेलन (IOC):** क्षेत्रीय कूटनीति के लिए एक महत्वपूर्ण मंच।
- **भारतीय महासागर रिम एसोसिएशन (IORA):** आर्थिक सहयोग और समुद्री सुरक्षा को बढ़ावा देने वाला संगठन।
- **भारतीय महासागर नौसैनिक संगोष्ठी (IONS):** नौसेना सहयोग और खुफिया साझेदारी को मजबूत करने की पहल।



- **कोलंबो सुरक्षा सम्मेलन:** समुद्री सुरक्षा और आतंकवाद विरोधी सहयोग (श्रीलंका, मालदीव और मॉरीशस के साथ)।
- **SAGAR (सुरक्षा और क्षेत्र में सभी के लिए विकास) पहल (2015):**
 - भारतीय महासागर क्षेत्र (IOR) में भारत की नेतृत्वकारी भूमिका को सुदृढ़ करता है।
 - वैश्विक व्यापार के लिए सुरक्षित समुद्री मार्गों को सुनिश्चित करता है।
 - सतत समुद्री विकास और नीली अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देता है।
- **समुद्री शक्ति (Blue-Water Capabilities) को सशक्त बनाना:**
 - **नौसेना विस्तार:** स्वदेशी विमानवाहक पोतों और अत्याधुनिक पनडुब्बियों का विकास।
 - **समुद्री निगरानी:** P-8I Poseidon निगरानी विमान और उपग्रह-आधारित ट्रैकिंग प्रणालियों की तैनाती।
 - **क्वाड सहयोग:** भारत, अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया के बीच समुद्री सुरक्षा और खुफिया साझेदारी को सुदृढ़ करना।

2. भारत में विकेंद्रीकरण: 2024 में पंचायतों को शक्तियों का हस्तांतरण

समाचार: केंद्रीय पंचायती राज मंत्रालय ने 'राज्यों में पंचायतों को शक्तियों के हस्तांतरण की स्थिति - एक संकेतात्मक साक्ष्य-आधारित रैंकिंग' (2024) रिपोर्ट जारी की है, जिसमें 73वें और 74वें संवैधानिक संशोधनों के कार्यान्वयन का आकलन किया गया है।

हस्तांतरण सूचकांक के बारे में

- इसे भारतीय लोक प्रशासन संस्थान (IIPA) द्वारा विकसित किया गया है, जो राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में पंचायती राज संस्थाओं (PRIs) को सौंपी गई शक्तियों और संसाधनों का मूल्यांकन करता है।
- राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को छह प्रमुख मापदंडों के आधार पर रैंक दिया गया है: संवैधानिक ढांचा, कार्य, वित्त, कार्मिक, क्षमता निर्माण, और जवाबदेही।

- **क्षमता वृद्धि:**
 - **राष्ट्रीय ग्राम स्वराज अभियान (RGSA)** के तहत क्षमता निर्माण में महत्वपूर्ण सुधार हुआ, जो 44% से बढ़कर 54.6% हो गया।
 - **कार्मिकों की भूमिका:** इस अवधि में 39.6% से बढ़कर 50.9% तक पहुंच गई।
- **प्रमुख रैंकिंग (विभिन्न मापदंडों के आधार पर)**
 - **संवैधानिक ढांचा:** केरल (1st), महाराष्ट्र, कर्नाटक, हरियाणा।
 - **कार्य (फंक्शंस):** तमिलनाडु (1st), कर्नाटक, ओडिशा, राजस्थान।
 - **वित्तीय प्रबंधन:** कर्नाटक (1st), केरल, तमिलनाडु, राजस्थान।
 - **कार्मिक (फंक्शनरी):** गुजरात (1st), तमिलनाडु, केरल।
 - **क्षमता निर्माण:** तेलंगाना (1st), तमिलनाडु, गुजरात।

प्रमुख चुनौतियाँ

- **कानूनी और संस्थागत कमजोरियाँ:** कई राज्य पंचायत चुनावों को टालते हैं या उनमें देरी करते हैं, जिससे स्थानीय स्वशासन कमजोर होता है।
- **सीमित नीतिगत अधिकार:** पंचायतों के पास मनरेगा (MGNREGA) और प्रधानमंत्री आवास योजना (PMAY) जैसी केंद्रीय प्रायोजित योजनाओं पर सीमित नियंत्रण है।
- **राज्यों के बीच असमानता:** मजबूत प्रशासनिक ढांचे वाले राज्य बेहतर प्रदर्शन कर रहे हैं, जबकि कमजोर कार्यान्वयन के कारण अन्य राज्य पिछड़ रहे हैं।
- **कम जनभागीदारी:** ग्राम सभाओं में नागरिकों की भागीदारी कम होती है, जिससे वे प्रभावी निर्णय लेने में असमर्थ रहती हैं।

सुधार के लिए सुझाव

- **कानूनी ढांचे को सशक्त बनाना:** नियमित पंचायत चुनावों को अनिवार्य

किया जाए और राज्य निर्वाचन आयोगों (SECs) को स्वायत्त बनाया जाए।

- **वित्तीय सशक्तिकरण:** स्थानीय निकायों के लिए **समेकित कोष** (Consolidated Fund) स्थापित किया जाए और 16वें वित्त आयोग की सिफारिशों के तहत **GST राजस्व** का उचित आवंटन सुनिश्चित किया जाए।
- **कार्यात्मक स्वायत्तता को बढ़ावा देना:** सेवा वितरण को विकेंद्रीकृत किया जाए ताकि पंचायतें ग्रामीण विकास में अधिक प्रभावी भूमिका निभा सकें।
- **जवाबदेही और पारदर्शिता को बढ़ाना:** ग्राम सभाओं को सक्रिय और प्रभावी बनाया जाए ताकि वे लोकतांत्रिक भागीदारी को मजबूत कर सकें।

Panchayati Raj in India- Timeline



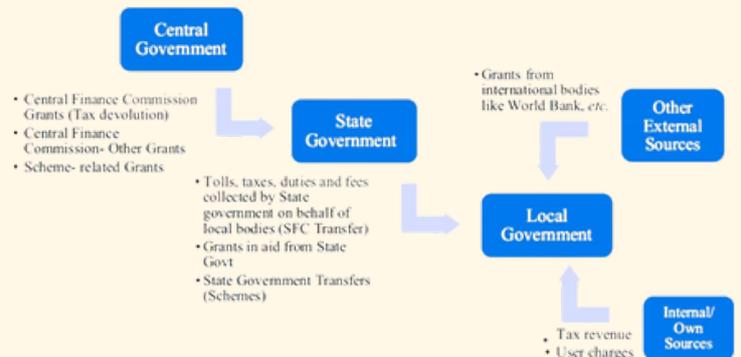
मूल्यांकन की आवश्यकता

- **संवैधानिक प्रावधानों** जैसे कि नियमित चुनाव, SC/ST एवं महिला आरक्षण, और राज्य वित्त आयोग की स्थापना के बावजूद, राज्यों में पंचायतों को वास्तविक शक्तियों का हस्तांतरण असमान रूप से हुआ है।
- **प्रभावी स्थानीय शासन के लिए केवल कार्य**, वित्त और कार्मिकों का हस्तांतरण ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि क्षमता निर्माण और जवाबदेही भी सुनिश्चित की जानी चाहिए।

मुख्य निष्कर्ष

- **शीर्ष प्रदर्शनकर्ता:** कर्नाटक पहले स्थान पर, उसके बाद केरल और तमिलनाडु।
- **हस्तांतरण में वृद्धि:** 2013-14 में 39.9% से बढ़कर 2021-22 में 43.9%।

Local Government Sources of Revenue



3. चिपको से शहरों तक: शहरी पर्यावरणीय आंदोलन का विकास

समाचार: पुणे नदी किनारे विकास परियोजना के खिलाफ हाल ही में **पुणे में हुए विरोध प्रदर्शनों** ने विकास और पर्यावरण संरक्षण के बीच बहस को फिर से जीवित कर दिया है। 'चलो चिपको' आंदोलन 1970 के दशक के चिपको आंदोलन की भावना को दर्शाता है।

चिपको आंदोलन: एक जमीनी पर्यावरणीय विरोध

- **शुरुआत:** 1973 में उत्तराखंड के चमोली में शुरू हुआ, जहां ग्रामीणों, विशेष रूप से महिलाओं, ने वनों की कटाई रोकने के लिए पेड़ों को गले लगाया।
- **मुख्य व्यक्ति:** सुंदरलाल बहुगुणा और गौरा देवी ने सतत विकास और पारिस्थितिक संरक्षण पर जोर दिया।

मुख्य विशेषताएँ:

- **जमीनी स्तर पर सक्रियता:** ग्रामीण समुदायों, विशेषकर महिलाओं, ने नेतृत्व किया।
- **अहिंसक प्रतिरोध:** गांधीवादी सिद्धांतों से प्रेरित होकर, प्रदर्शनकारियों ने पेड़ों से चिपककर और धरना देकर विरोध किया।
- **पर्यावरण जागरूकता:** मिट्टी के कटाव को रोकने और जैव विविधता बनाए रखने में वनों की भूमिका को उजागर किया।
- **नीतिगत प्रभाव:** 1980 में हिमालयी क्षेत्र में वाणिज्यिक वनों की कटाई पर सरकारी प्रतिबंध लागू हुआ।

शहरी पर्यावरणीय आंदोलनों पर चिपको का प्रभाव

शहरों में प्रदूषण, जल संकट और वनों की कटाई जैसी पर्यावरणीय समस्याएँ बढ़ रही हैं। अब शहरी आंदोलन भी चिपको की भावना को अपनाकर विरोध, कानूनी कार्रवाई और जनजागरूकता अभियानों का सहारा ले रहे हैं।

आस्येक्ट	चिपको आंदोलन (1973)	शहरी पर्यावरणीय आंदोलन
प्रसंग (Context)	वनों की अंधाधुंध कटाई रोकने के लिए ग्रामीण समुदायों का विरोध।	शहरी विकास परियोजनाओं के कारण पर्यावरणीय क्षति को रोकने का प्रयास।
स्थान (Location)	ग्रामीण क्षेत्र (मुख्यतः उत्तराखंड का हिमालयी क्षेत्र)।	शहरी क्षेत्र (महानगर और बड़े शहर जैसे दिल्ली, मुंबई, पुणे)।
मुख्य मुद्दे (Key Issues)	वनों की कटाई, पारिस्थितिक असंतुलन, मिट्टी का कटाव, जैव विविधता का संरक्षण।	प्रदूषण, जल संकट, पेड़ों की कटाई, नदियों और झीलों के अतिक्रमण, कचरा प्रबंधन।
नेतृत्व (Leadership)	स्थानीय ग्रामीण, विशेष रूप से महिलाएँ (गौरा देवी, सुंदरलाल बहुगुणा)।	शहरी सामाजिक कार्यकर्ता, पर्यावरणविद, नागरिक समूह।
विरोध के तरीके (Protest Methods)	पेड़ों को गले लगाकर (चिपको), धरना, अहिंसक प्रतिरोध।	जन जागरूकता अभियान, कानूनी याचिकाएँ, सोशल मीडिया विरोध, प्रदर्शन।
सरकार पर प्रभाव (Policy Impact)	1980 में सरकार द्वारा हिमालयी क्षेत्रों में वनों की व्यावसायिक कटाई पर प्रतिबंध।	कुछ परियोजनाओं को रोकने या संशोधित करने में सफलता (जैसे आरे जंगल संरक्षण आंदोलन, पुणे नदी किनारे परियोजना विरोध)।
दीर्घकालिक प्रभाव (Long-Term Impact)	सतत विकास और वनों की रक्षा को लेकर नीति निर्माण में योगदान।	शहरी नियोजन में पर्यावरणीय चिंताओं को शामिल करने की बढ़ती प्रवृत्ति।

चिपको से प्रेरित प्रमुख शहरी पर्यावरणीय आंदोलनों

- **आरे जंगल बचाओ (मुंबई):** मेट्रो परियोजना के लिए 2,700+ पेड़ों की कटाई के विरोध में चिपको-शैली की मानव श्रृंखला और कानूनी कार्रवाई।
- **अरोवली बचाओ अभियान (गुरुग्राम):** अवैध खनन और अतिक्रमण के खिलाफ आंदोलन, अरोवली पहाड़ियों की वायु शुद्धिकरण भूमिका को उजागर करता है।
- **वायु प्रदूषण अभियान (दिल्ली-एनसीआर):** राइट टू क्लीन एयर और माई राइट टू ब्रीद जैसी पहलें कड़े पर्यावरणीय नियमों की मांग करती हैं।
- **झील संरक्षण आंदोलन (बेंगलुरु व हैदराबाद):** नागरिकों द्वारा बेलंदूर और उलसूर जैसी झीलों की रक्षा के लिए विरोध और जनहित याचिकाएँ।
- **राहगिरी आंदोलन (गुरुग्राम व अन्य शहर):** पैदल यात्रियों के अनुकूल, वाहनों से मुक्त सड़कों की वकालत कर प्रदूषण नियंत्रण और सार्वजनिक स्थलों को पुनः प्राप्त करने की पहल।

पर्यावरणीय विरोध प्रदर्शनों की चुनौतियाँ और भविष्य

- **सरकारी और कॉर्पोरेट प्रतिरोध:** बुनियादी ढांचा परियोजनाएँ अक्सर आर्थिक विकास को स्थिरता से अधिक प्राथमिकता देती हैं।
- **जन उदासीनता:** शहरी पर्यावरणीय समस्याएँ ग्रामीण वनों की कटाई की तुलना में कम गंभीर मानी जाती हैं।
- **कानूनी लड़ाइयाँ:** जटिल और लंबी कानूनी प्रक्रियाएँ पर्यावरण संरक्षण प्रयासों में देरी करती हैं।
- **बढ़ता सक्रियता:** फ्राइडेज़ फॉर फ्यूचर इंडिया जैसे आंदोलनों से युवाओं के नेतृत्व में पर्यावरणीय चेतना बढ़ रही है।

निष्कर्ष:

चिपको आंदोलन आज भी जमीनी सक्रियता और पर्यावरणीय जागरूकता का प्रतीक बना हुआ है। इसके अहिंसक प्रतिरोध और सामुदायिक भागीदारी के सिद्धांत शहरी पर्यावरणीय आंदोलनों को प्रेरित कर रहे हैं, जिससे एक अधिक सतत भविष्य की दिशा तय हो रही है।

4. भारत में रोजगार का बदलाव: सार्वजनिक से निजी क्षेत्र की ओर बढ़ता रुझान

समाचार: 1991 के आर्थिक सुधारों के बाद, भारत में रोजगार का रुझान सार्वजनिक क्षेत्र से निजी क्षेत्र की ओर स्थानांतरित हो गया है, जिससे कार्यरत मध्यवर्ग की संरचना में महत्वपूर्ण बदलाव आया है।

रोजगार में प्रमुख रुझान

- **सार्वजनिक क्षेत्र में नौकरियों की संख्या घटी:**
 - 1995 में सार्वजनिक क्षेत्र में रोजगार 194.7 लाख था, जो 2012 में घटकर 176.1 लाख रह गया।
 - इसके विपरीत, निजी क्षेत्र में नौकरियों की संख्या 80.6 लाख से बढ़कर 119.7 लाख हो गई।
 - भारतीय रेलवे में कार्यरत कर्मचारियों की संख्या 1990-91 में 16.5 लाख थी, जो 2022-23 में घटकर 11.9 लाख रह गई।
- **निजी क्षेत्र में रोजगार के अवसर बढ़े:**
 - आईटी क्षेत्र में भारी वृद्धि हुई है। 2004-05 में टीसीएस और इंफोसिस में क्रमशः 45,714 और 36,750 कर्मचारी थे, जो 15 वर्षों में बढ़कर 4,48,464 और 2,42,371 हो गए।
 - 2023-24 में निजी बैंकों में 8.74 लाख कर्मचारी कार्यरत हैं, जो सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों में कार्यरत 7.5 लाख कर्मचारियों से अधिक है।

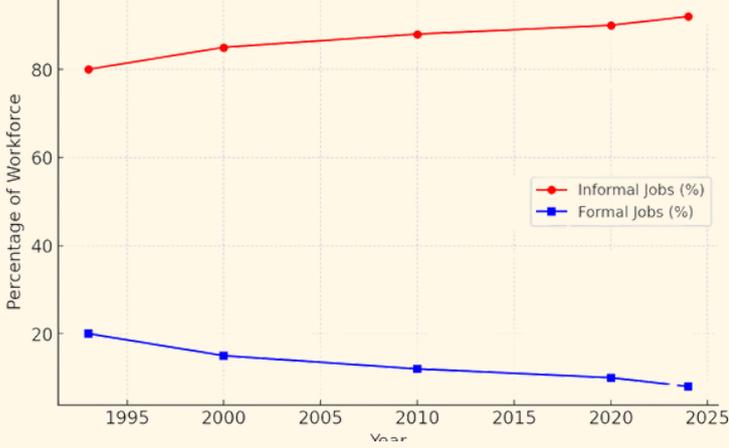
कार्यबल में बदलाव के कारण

- **आर्थिक उदारीकरण (1991):** निजी क्षेत्र में रोजगार के अवसर बढ़े।
- **निजी नौकरियों में अधिक वेतन और करियर ग्रोथ:** सरकारी नौकरियों की तुलना में निजी कंपनियों अधिक आकर्षक वेतन और प्रोत्साहन देती हैं।
- **सरकारी नौकरियों की संख्या सीमित:** सरकारी भर्तियाँ धीमी गति से होती हैं और नई नौकरियाँ सीमित हैं।
- **उद्यमिता और स्टार्टअप का बढ़ता प्रभाव:** अधिक लोग आत्मनिर्भर बनने और अपने व्यवसाय शुरू करने की दिशा में बढ़ रहे हैं।

रोजगार से जुड़ी चुनौतियाँ

- **अर्थव्यवस्था अभी भी कृषि पर निर्भर:**
 - कृषि क्षेत्र में कार्यरत जनसंख्या 1993-94 में 64% थी, जो 2018-19 में 42.5% हो गई, लेकिन 2023-24 में फिर से बढ़कर 46.2% हो गई।
- **अनौपचारिक क्षेत्र का प्रभुत्व:**
 - भारत की 85% कार्यशक्ति अनौपचारिक क्षेत्र में कार्यरत है, जहां कम वेतन और कोई सामाजिक सुरक्षा नहीं है।

Formal vs. Informal Jobs in India Over Time



- वंचित और कमजोर वर्गों की अधिक भागीदारी अस्थिर नौकरियों में बनी हुई है।
- **कौशल विकास की कमी:**
 - शिक्षा प्रणाली अत्यधिक सैद्धांतिक बनी हुई है, जिससे स्नातकों को उद्योग की जरूरतों के अनुरूप कौशल नहीं मिल पाता।
 - ग्रामीण क्षेत्रों में गुणवत्तापूर्ण कौशल विकास कार्यक्रमों की कमी है।

आगे का रास्ता

- **कौशल विकास को मजबूत करना:** शिक्षा को उद्योगों की जरूरतों के अनुरूप बनाया जाए।
- **सरकारी पहल:** हरित नौकरियों (जैसे सौर ऊर्जा, कचरा प्रबंधन) में कौशल विकास को बढ़ावा दिया जाए।
- **ग्रामीण प्रशिक्षण कार्यक्रमों का विस्तार:** टेक्नोलॉजी का उपयोग करके ग्रामीण क्षेत्रों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और प्रशिक्षण दिया जाए।
- **रोजगार स्थिरता को बढ़ावा देना:** अपस्किलिंग प्रोग्राम, समावेशी कार्य-संस्कृति और मानसिक स्वास्थ्य सहायता को बढ़ाया जाए।

5. RuTAGE स्मार्ट विलेज सेंटर: तकनीक और ग्रामीण विकास के बीच सेतु

समाचार: ग्रामीण तकनीकी नवाचार और सतत विकास को बढ़ावा देने के लिए RuTAGE स्मार्ट विलेज सेंटर (RSVC) की शुरुआत मांडौरा गांव, सोनीपत में की गई।

RSVC के बारे में

- **प्रधान वैज्ञानिक सलाहकार (PSA)** कार्यालय द्वारा संकल्पित, RSVC एक स्थायी पंचायत-स्तरीय केंद्र के रूप में कार्य करता है, जो 15-20 गांवों को सेवाएं प्रदान करता है।
- इसे **NSE के सोशल स्टॉक एक्सचेंज इवेंट (2024)** में प्रभावशाली ग्रामीण विकास मॉडल के लिए प्रथम पुरस्कार मिला।

मुख्य तकनीकी समाधान

RSVC 12 तकनीकी क्षेत्रों के माध्यम से ग्रामीण चुनौतियों का समाधान करता है:

- **कृषि और अपशिष्ट प्रबंधन:** पूर्व-बुआई से कटाई के बाद तक सहायता, ग्रामीण पर्यटन, और केवीके के सहयोग से अपशिष्ट प्रबंधन।
- **RuTAGE तकनीक:** PSA कार्यालय के तहत 7 IIT द्वारा विकसित समाधान।
- **आजीविका और उद्यमिता:** उत्तर प्रदेश में एनआरएलएम के माध्यम से स्थानीय व्यवसायों को बढ़ावा।
- **नवीकरणीय ऊर्जा:** SELCO फाउंडेशन के सहयोग से सौर और पवन ऊर्जा समाधान।
- **WASH (जल, स्वच्छता और स्वास्थ्य):** IIT मद्रास एक्वामैप्स और weVois के माध्यम से जल और अपशिष्ट प्रबंधन।

- **फिनटेक:** वित्तीय समावेशन उपकरण और IISC व XR ग्रुप द्वारा विकसित AR/VR समाधान।
- **क्षमता निर्माण:** NIFTEM और NAARM जैसे संस्थानों के साथ शोध सहयोग और प्रशिक्षण।
- **सरकारी योजनाओं के ऐप:** कल्याणकारी और वैज्ञानिक कार्यक्रमों तक डिजिटल पहुंच।
- **सहायक प्रौद्योगिकियां:** असिस्टिव टेक्नोलॉजी फाउंडेशन के माध्यम से दिव्यांग व्यक्तियों के लिए नवाचार।

RSVC का उद्देश्य

- ग्रामीण समुदायों को तकनीकी प्रगति से जोड़ना।
- जैविक खेती, वन्यजीवों से फसलों की सुरक्षा और रोजगार सृजन जैसी समस्याओं का समाधान।

ग्रामीण विकास में प्रौद्योगिकी की भूमिका

- **कृषि:** उन्नत उपकरण और मशीनीकरण से उत्पादकता में वृद्धि।
- **शिक्षा:** डिजिटल प्लेटफॉर्म (PM e-VIDYA, SWAYAM) के माध्यम से बेहतर शिक्षा पहुंच।
- **वित्तीय समावेशन:** DBT और PM जन धन योजना के माध्यम से सुरक्षित कैशलेस लेनदेन।
- **जल प्रबंधन:** भूजल उपयोग के लिए राष्ट्रीय एक्विफर मैपिंग।

भविष्य की योजना

RSVC मॉडल को बड़े पैमाने पर विस्तारित करने, फीडबैक के आधार पर सुधार करने और ग्रामीण आजीविका पर स्थायी प्रभाव बनाने की योजना है

TAGe से संबंधित सरकारी योजनाएँ

1. कृषि और ग्रामीण विकास

- **परंपरागत कृषि विकास योजना (PKVY):** जैविक खेती को बढ़ावा देने के लिए।
- **ई-नाम (e-NAM):** किसानों के लिए एकीकृत राष्ट्रीय कृषि डिजिटल मार्केटप्लेस।

2. नवीकरणीय ऊर्जा और पर्यावरणीय स्थिरता

- **प्रधानमंत्री कुसुम योजना (PM-KUSUM):** कृषि क्षेत्र में सौर ऊर्जा के उपयोग को बढ़ावा।
- **राष्ट्रीय जैव-ऊर्जा मिशन:** कृषि और जैविक कचरे से ऊर्जा उत्पादन को प्रोत्साहन।

3. आजीविका और उद्यमिता

- **महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम (MGNREGA):** ग्रामीण क्षेत्रों में न्यूनतम 100 दिन के रोजगार की गारंटी।
- **दीनदयाल अंत्योदय योजना - राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (DAY-NRLM):** स्वयं सहायता समूहों और ग्रामीण उद्यमिता को सशक्त बनाना।

4. जल, स्वच्छता और अपशिष्ट प्रबंधन

- **स्वच्छ भारत मिशन (ग्रामीण):** ग्रामीण स्वच्छता, ठोस और तरल अपशिष्ट प्रबंधन पर केंद्रित।

5. वित्तीय समावेशन और डिजिटल सशक्तिकरण

- **प्रधानमंत्री जन धन योजना:** बैंकिंग सेवाओं तक सभी की पहुँच सुनिश्चित करना।
- **डिजिटल इंडिया मिशन:** ग्रामीण क्षेत्रों में इंटरनेट कनेक्टिविटी और डिजिटल सेवाओं का विस्तार।

6. सहायक प्रौद्योगिकी और कौशल विकास

- **सुगम्य भारत अभियान:** दिव्यांगजनों के लिए सार्वजनिक स्थानों और सेवाओं को अधिक सुलभ बनाना।
- **स्किल इंडिया मिशन:** युवाओं को उद्योग-उन्मुख व्यावसायिक प्रशिक्षण और कौशल विकास प्रदान करना।

6. दिल्ली भूकंप: कारण, प्रभाव और जोखिम

समाचार: हाल ही में दिल्ली-एनसीआर में आए **4.0 तीव्रता के भूकंप** ने अपेक्षाकृत कम तीव्रता होने के बावजूद तेज झटके पैदा किए। राष्ट्रीय भूकंप विज्ञान केंद्र (NCS) ने इसे टेक्टोनिक गतिविधि के बजाय **इन-सीटू सामग्री विषमता (In-Situ Material Heterogeneity)** के कारण बताया।

इन-सीटू सामग्री विषमता क्या है?

आमतौर पर भूकंप **टेक्टोनिक प्लेटों की हलचल** से होते हैं, लेकिन यह घटना प्राकृतिक **भूवैज्ञानिक परिवर्तनों** के कारण हुई, जैसे:

- चट्टानों के प्रकार और घनत्व में अंतर
- भूमिगत तरल पदार्थों की उपस्थिति
- पृथ्वी की ऊपरी परत में संचित स्थानीय तनाव

झटके इतने तेज़ क्यों महसूस हुए?

- **कम गहराई (5 किमी):** ऊर्जा का कम अपव्यय, जिससे सतह पर अधिक कंपन हुआ।
- **एपिसेंटर दिल्ली के भीतर:** घनी आबादी और ऊंची इमारतों ने प्रभाव को बढ़ाया।
- **नरम जलोढ़ मिट्टी:** इंडो-गंगा के मैदान की भूगर्भीय संरचना ने **भूकंपीय तरंगों** को अधिक शक्तिशाली बनाया।

दिल्ली की भूकंपीय संवेदनशीलता

- **सीस्मिक ज़ोन IV** में स्थित (भारत में दूसरा सबसे अधिक जोखिम वाला क्षेत्र)।
- **प्रमुख भूगर्भीय भंशों (Fault Lines) के निकट:**
 - दिल्ली-हरिद्वार रिज: भारतीय प्लेट का एक विस्तार।
 - अरावली फॉल्ट सिस्टम: एक गहरे भूवैज्ञानिक संरचना।

भारत के भूकंपीय क्षेत्र एवं जोखिम क्षेत्र

- **ज़ोन V (अति उच्च जोखिम):** पूर्वोत्तर भारत, उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश, बिहार, गुजरात।
- **ज़ोन IV:** दिल्ली, महाराष्ट्र के कुछ हिस्से, जम्मू-कश्मीर – उच्च भूकंप संभावना।
- **ज़ोन III:** दक्षिणी और मध्य भारत में मध्यम जोखिम।
- **ज़ोन II:** न्यूनतम जोखिम, ज्यादातर दक्षिणी क्षेत्र।

सरकारी पहल

- **भूकंप निगरानी:** भारतीय मौसम विभाग (IMD) **भूकंपीय गतिविधियों** पर वास्तविक समय अपडेट देता है।
- **NDMA दिशानिर्देश:** भूकंप से बचाव, जागरूकता और संरचनात्मक सुरक्षा पर केंद्रित।
- **सुदृढ़ इंफ्रास्ट्रक्चर:** स्मार्ट सिटी मिशन के तहत उच्च जोखिम वाले क्षेत्रों में भूकंप-रोधी निर्माण को बढ़ावा दिया जा रहा है।



7. पीटलैंड: संकट में एक महत्वपूर्ण कार्बन सिंक

समाचार: हालिया अध्ययन में चेतावनी दी गई है कि पीटलैंड, जो महत्वपूर्ण कार्बन भंडार हैं, पर्याप्त रूप से संरक्षित नहीं हैं। इनका क्षरण वैश्विक जलवायु लक्ष्यों को गंभीर खतरे में डाल सकता है।

पीटलैंड क्या हैं?

पीटलैंड ऐसे **जलभर भूमि पारिस्थितिक तंत्र** हैं, जहाँ आंशिक रूप से विघटित जैविक पदार्थ हजारों वर्षों तक कार्बन संग्रहित करते हैं। ये सभी जलवायु क्षेत्रों में पाए जाते हैं, और इनकी **वनस्पति भौगोलिक स्थिति** के अनुसार बदलती है—ठंडे क्षेत्रों में स्पैगनम मॉस और गर्म जलवायु में घास एवं अन्य पौधे प्रमुख होते हैं।

वैश्विक विस्तार और कार्बन संग्रहण

- पीटलैंड विश्व की भूमि सतह का 4.23 मिलियन किमी² (**2.84%**) कवर करते हैं।
- **पांच देश**—कनाडा, रूस, इंडोनेशिया, अमेरिका और ब्राजील—वैश्विक पीटलैंड का 70% हिस्सा रखते हैं।
- ये लगभग **600 अरब टन कार्बन संग्रहीत** करते हैं, जो विश्व के सभी वनों में संचित कार्बन से अधिक है।
- इसके बावजूद, **केवल 17% पीटलैंड** को औपचारिक संरक्षण प्राप्त है।

भारत में पीटलैंड और वेटलैंड

- **सुंदरबन वेटलैंड** (पश्चिम बंगाल) – रामसर साइट, जैव विविधता का महत्वपूर्ण केंद्र।
- **लोकतक झील** (मणिपुर) – तैरते हुए पीटलैंड संरचनाएँ (फुमदी), पारिस्थितिकी तंत्र के लिए अत्यंत आवश्यक।
- **वुलर झील** (जम्मू और कश्मीर) – व्यापक पीट जमाव वाला क्षेत्र।
- **कच्छ का रण** (गुजरात) – मौसमी वेटलैंड, जो मानसूनी जलभराव पर निर्भर करता है।
- **केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान** (राजस्थान) – पीट-समृद्ध वेटलैंड, पक्षी प्रवास का प्रमुख केंद्र।

पीटलैंड के लिए प्रमुख खतरे

- **कृषि और वानिकी** – खेती और लकड़ी के कटान के लिए जल निकासी, जिससे संग्रहीत कार्बन वातावरण में मुक्त हो जाता है।
- **खनन और आधारभूत संरचना** – ईंधन और व्यावसायिक उद्देश्यों के लिए पीट का दोहन, जिससे भंडार तेजी से नष्ट हो रहे हैं।
- **जलवायु परिवर्तन** – बढ़ते तापमान और अनियमित वर्षा से पीटलैंड के क्षरण और जंगल की आग का खतरा बढ़ जाता है।

संरक्षण प्रयास

- **स्वदेशी समुदायों की भूमिका:** दुनिया के 27% पीटलैंड स्वदेशी समुदायों की भूमि में स्थित हैं, जहाँ पारंपरिक विधियाँ इनके संरक्षण में सहायक होती हैं।
- **वैश्विक पहल:**
 - **ब्राज़ाविल घोषणा** (2018): कांगो बेसिन पीटलैंड की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए।
 - **ग्लोबल पीटलैंड इनिशिएटिव** (GPI): UNEP के नेतृत्व में वैश्विक पीटलैंड संरक्षण कार्यक्रम।
 - **रामसर साइट्स:** संरक्षित पीटलैंड का 20% कवर करती हैं, विशेष रूप से उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में।

भविष्य की दिशा

- **मजबूत कानूनी सुरक्षा:** पीटलैंड संरक्षण को राष्ट्रीय कानूनों और पेरिस समझौते के तहत राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित योगदान (NDCs) में शामिल करना।
- **स्वदेशी संरक्षण प्रयासों को समर्थन:** स्थानीय समुदायों द्वारा पारंपरिक संरक्षण पद्धतियों को औपचारिक मान्यता देना।
- **सतत प्रबंधन:** क्षतिग्रस्त पीटलैंड को बहाल करने के लिए पुनर्जलीकरण (rewetting) और जिम्मेदार भूमि उपयोग नीतियों को लागू करना।

निष्कर्ष:

पीटलैंड कार्बन भंडारण और **जलवायु संतुलन** में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इनके संरक्षण के लिए त्वरित नीति सुधार, वैश्विक सहयोग, और **सतत संरक्षण** रणनीतियों की आवश्यकता है।

8. भारत में डिजिटल सामग्री पर सेंसरशिप: अभिव्यक्ति और नियंत्रण के बीच संतुलन

प्रसंग: सोशल मीडिया, स्ट्रीमिंग सेवाओं और स्वतंत्र पत्रकारिता के बढ़ते प्रभाव के साथ, भारत में डिजिटल सामग्री की सेंसरशिप को लेकर बहस तेज हो गई है। हाल ही में इंडियाज़ गॉट टैटेंट शो से जुड़े विवाद ने इस मुद्दे को फिर से चर्चा में ला दिया है।

डिजिटल सेंसरशिप क्या है?

डिजिटल सामग्री पर **सेंसरशिप** का अर्थ है ऑनलाइन सामग्री को सरकार, संगठनों या प्लेटफार्मों द्वारा **प्रतिबंधित या हटाना**। इसके अंतर्गत निम्नलिखित शामिल हैं:

- वेबसाइटों और ऐप्स को ब्लॉक करना
- सोशल मीडिया पोस्ट को हटाना
- ओटीटी (OTT) प्लेटफार्मों पर नियम लागू करना
- डिजिटल पत्रकारिता पर प्रतिबंध लगाना

डिजिटल सेंसरशिप पर बहस क्यों?

नियमन के पक्ष में तर्क:

- **हेट स्पीच** और फर्जी खबरों की रोकथाम: गलत और भड़काऊ सामग्री पर नियंत्रण आवश्यक।
- **संस्कृति** और सामाजिक मूल्यों की रक्षा: भारत की सांस्कृतिक विविधता को बनाए रखने की आवश्यकता।
- **ऑनलाइन उत्पीड़न** और अश्लीलता पर नियंत्रण: साइबरबुलिंग और अनुचित सामग्री को रोकना।
- **बाल संरक्षण:** बच्चों के लिए आयु-आधारित सामग्री प्रतिबंध लागू करना।

सेंसरशिप को लेकर चिंताएँ:

- **अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर खतरा:** अत्यधिक नियंत्रण से असहमति और रचनात्मकता बाधित हो सकती है।
- **पारदर्शिता की कमी:** सामग्री हटाने के निर्णय स्पष्ट दिशानिर्देशों के बिना लिए जाते हैं।
- **राजनीतिक दुरुपयोग:** सेंसरशिप का उपयोग आलोचना और स्वतंत्र मीडिया को दबाने के लिए किया जा सकता है।

भारत में डिजिटल सेंसरशिप का कानूनी ढांचा

- **अनुच्छेद 19(1)(a) और 19(2):** अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता उचित प्रतिबंधों के अधीन है।
- **आईटी अधिनियम, 2000 (धारा 69A):** सरकार को राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए सामग्री ब्लॉक करने का अधिकार।
- **मध्यस्थ दिशानिर्देश, 2021:** डिजिटल मीडिया, ओटीटी और सोशल मीडिया प्लेटफार्मों को नियंत्रित करता है।
- **ओटीटी प्लेटफार्मों का स्व-नियमन:** नेटफ्लिक्स जैसे प्लेटफार्म स्वैच्छिक दिशानिर्देश अपनाते हैं।
- **सिनेमैटोग्राफ अधिनियम, 1952 (संशोधन प्रस्ताव):** ओटीटी को फिल्म सेंसरशिप के तहत लाने की योजना।
- **प्रेस और पीरियोडिकल्स पंजीकरण विधेयक, 2023:** डिजिटल समाचार प्लेटफार्मों को विनियमित करने के लिए प्रस्तावित।

वैश्विक सेंसरशिप नीतियाँ

- **चीन:** डिजिटल सामग्री पर सख्त सरकारी नियंत्रण।
- **यूरोपीय संघ:** डिजिटल सर्विसेज एक्ट सेंसरशिप और स्वतंत्रता के बीच संतुलन बनाता है।
- **अमेरिका:** प्लेटफार्मों द्वारा आत्म-नियमन पर निर्भर।

डिजिटल सेंसरशिप की चुनौतियाँ

- **नियमन बनाम स्वतंत्रता:** अत्यधिक नियंत्रण लोकतांत्रिक विमर्श को बाधित कर सकता है।
- **सीमा क्षेत्रीय जटिलताएँ:** कई डिजिटल प्लेटफार्म भारत के बाहर संचालित होते हैं।
- **तकनीक का तेज़ी से बदलना:** नए डिजिटल रूझनों के अनुरूप कानूनों को अद्यतन करना आवश्यक।
- **नैतिकता से जुड़ी बहस:** अश्लीलता और आपत्तिजनक सामग्री की परिभाषा व्यक्तिपरक हो सकती है।

सुप्रीम कोर्ट का दृष्टिकोण

अपूर्वा अरोड़ा बनाम दिल्ली सरकार (2024) मामले में, **सुप्रीम कोर्ट** ने कहा कि अश्लीलता निर्धारित करने के लिए **वस्तुनिष्ठ मानदंड** होने चाहिए, न कि केवल नैतिक आधार। हालांकि, स्पष्ट दिशानिर्देशों की कमी अब भी एक चुनौती बनी हुई है।

आगे का रास्ता

- **स्वतंत्र नियामक संस्थाएँ:** सरकारी हस्तक्षेप से मुक्त और निष्पक्ष कार्यप्रणाली।
- **मॉडरेशन में पारदर्शिता:** प्लेटफार्मों को सामग्री हटाने के निर्णयों को सार्वजनिक करना चाहिए।
- **डिजिटल साक्षरता बढ़ाना:** उपयोगकर्ताओं को फेक न्यूज और सटीक तथ्यों के बीच अंतर समझाने की शिक्षा देना।
- **सार्वजनिक परामर्श:** नीति-निर्माण में विशेषज्ञों, पत्रकारों और नागरिक समाज को शामिल करना।

निष्कर्ष

हालांकि हानिकारक सामग्री को नियंत्रित करने के लिए कुछ स्तर तक **सेंसरशिप आवश्यक है**, **अत्यधिक नियंत्रण लोकतंत्र** और रचनात्मक स्वतंत्रता को बाधित कर सकता है। एक संतुलित और पारदर्शी दृष्टिकोण ही खुले और निष्पक्ष डिजिटल स्पेस को बनाए रखने का सही तरीका है।

9. भारत-चीन संबंध: सहयोग और तनाव के बीच संतुलन

प्रसंग: भारत और चीन, विश्व की दो प्रमुख शक्तियाँ, एक **जटिल इतिहास** साझा करते हैं जिसमें सहयोग, **प्रतिस्पर्धा और तनाव की मिश्रित** भूमिका रही है। आर्थिक संबंध मजबूत हुए हैं, लेकिन सीमा विवाद और रणनीतिक प्रतिद्वंद्विता उनके रिश्तों को प्रभावित करते रहते हैं।

ऐतिहासिक परिदृश्य

- **प्रारंभिक कूटनीतिक संबंध (1950 का दशक):** भारत ने 1950 में चीन को मान्यता दी और 1954 में पंचशील समझौते पर हस्ताक्षर किए। लेकिन 1962 के भारत-चीन युद्ध ने प्रारंभिक सद्भाव को समाप्त कर दिया।
- **शीत युद्ध काल (1962-1990):** चीन पाकिस्तान और अमेरिका के करीब चला गया, जबकि भारत सोवियत संघ के साथ जुड़ गया। इस दौरान नाथू ला (1967), चो ला (1967) और सुमदोरोंग चू (1987) में झड़पें हुईं। 1988 में प्रधानमंत्री राजीव गांधी की चीन यात्रा से कूटनीतिक संबंधों में सुधार शुरू हुआ।
- **आर्थिक सहयोग और कूटनीतिक जुड़ाव (1990-2010):** 1993 और 1996 में सीमा-व्यवस्था समझौतों से स्थिरता आई। 2005 में रणनीतिक साझेदारी ने व्यापार और बहुपक्षीय सहयोग (BRICS, SCO) को बढ़ावा दिया।
- **सीमा विवाद और सैन्य टकराव (2010-वर्तमान):**
 - **देपसांग (2013), चुमार (2014), डोकलाम (2017), और गलवान (2020)** जैसी घटनाओं ने तनाव बढ़ाया।
 - कई दौर की **सैन्य वार्ताओं** के बावजूद वास्तविक नियंत्रण रेखा (LAC) पर अस्थिरता बनी हुई है।

मुख्य विवाद

- **आर्थिक संबंध:**
 - चीन भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार है (**\$125 अरब द्विपक्षीय व्यापार, 2024**), लेकिन व्यापार असंतुलन चिंता का विषय है।
 - सुरक्षा चिंताओं के कारण भारत ने चीनी निवेश और ऐप्स पर प्रतिबंध लगाए हैं।
- **भू-राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता:**
 - भारत, चीन के **बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (BRI)** का विरोध करता है और हिंद-प्रशांत क्षेत्र में अपनी भूमिका बढ़ा रहा है।
 - **चीन की पाकिस्तान** से करीबी और हिंद महासागर क्षेत्र (IOR) में बढ़ती उपस्थिति भारत के लिए रणनीतिक चुनौती है।

TERRITORIAL DISPUTE



सीमा विवाद:

- लद्दाख, अरुणाचल प्रदेश और सिक्किम में सैन्य तनाव बना हुआ है।
- वार्ता के बावजूद सीमा विवादों का समाधान धीमा है।

भविष्य की दिशा

आर्थिक विविधीकरण:

- चीनी आयात पर निर्भरता कम करना और घरेलू उद्योगों को बढ़ावा देना।
- व्यापार समझौतों के जरिए असंतुलन को कम करना।

सैन्य और रणनीतिक तैयारी:

- सीमा पर बुनियादी ढांचे को मजबूत करना और क्षेत्रीय गठबंधनों को बढ़ाना।
- WMCC और कोर कमांडर-स्तरीय वार्ताओं के माध्यम से निरंतर संवाद।

वैश्विक सहयोग:

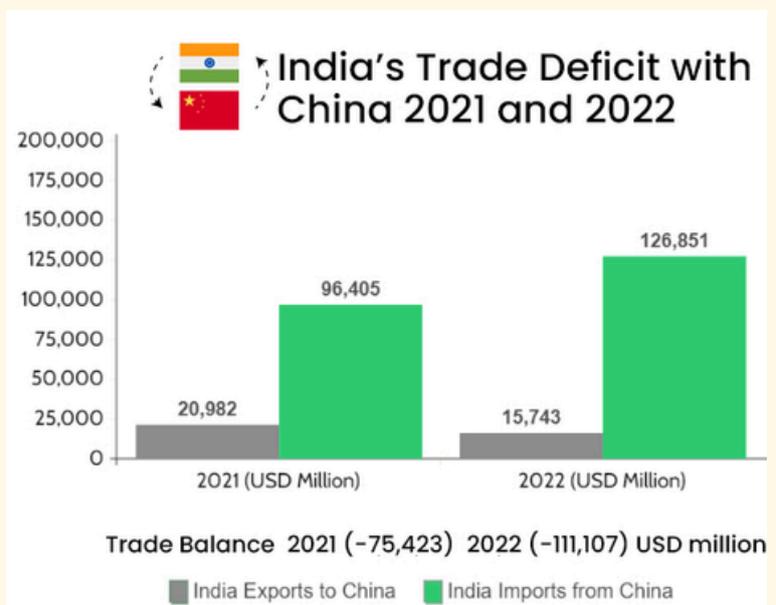
- जलवायु परिवर्तन, व्यापार और आतंकवाद-रोधी प्रयासों में सहयोग की संभावनाएँ।
- नियमित कूटनीतिक वार्ताएँ विश्वास बहाली के लिए आवश्यक।

सांस्कृतिक और शैक्षिक आदान-प्रदान:

- पर्यटन, छात्र विनिमय और शैक्षणिक सहयोग को बढ़ावा देना।

निष्कर्ष:

भारत-चीन संबंध आर्थिक परस्पर निर्भरता और रणनीतिक तनाव के मिश्रण से परिभाषित होते हैं। जबकि कूटनीतिक संवाद महत्वपूर्ण बना रहेगा, **सीमा विवादों का समाधान** और **भू-राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता** का प्रबंधन इस जटिल संबंध के भविष्य को निर्धारित करेगा।



10. संवैधानिक नैतिकता: लोकतंत्र का मार्गदर्शक सिद्धांत

समाचार: हाल के वर्षों में, भारतीय न्यायालयों ने संवैधानिक नैतिकता को कानूनों की व्याख्या और संवैधानिक विवादों के निपटारे में एक मार्गदर्शक सिद्धांत के रूप में अपनाया है। यह विकसित होती अवधारणा न्याय, समानता और लोकतंत्र की रक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

संवैधानिक नैतिकता क्या है?

संवैधानिक नैतिकता संविधान में निहित मूलभूत मूल्यों—न्याय, स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व—का पालन करने की अवधारणा है। यह इस पर बल देती है कि:

- व्यक्तिगत या बहुसंख्यक** विचारों से ऊपर संवैधानिक सिद्धांतों को प्राथमिकता दी जाए।
- संस्थाएँ लोकतांत्रिक मानकों** को बनाए रखने में सक्रिय भूमिका निभाएँ। उत्पत्ति और विकास
- जार्ज ग्रोट (19वीं सदी):** ब्रिटिश इतिहासकार ने अपनी पुस्तक ए हिस्ट्री ऑफ ग्रीस में इस अवधारणा का उल्लेख किया, जिसमें उन्होंने सार्वजनिक तर्क, आत्म-संयम और संवैधानिक मानकों के पालन को महत्वपूर्ण बताया।
- डॉ. बी.आर. अंबेडकर (1948):** उन्होंने भारत के लोकतंत्र में संवैधानिक नैतिकता को अपरिहार्य माना, जिससे कानून व्यक्तिगत पूर्वाग्रहों और बहुसंख्यक प्रभाव से ऊपर रह सकें।

न्यायिक व्याख्याएँ और विस्तार

- केशवानंद भारती केस (1973):** संवैधानिक नैतिकता को मूल संरचना सिद्धांत (Basic Structure Doctrine) से जोड़ा।
- के.एस. पुट्टास्वामी केस (2017):** निजता के अधिकार को मौलिक अधिकार घोषित किया।
- नवतेज सिंह जौहर केस (2018):** धारा 377 को असंवैधानिक ठहराया, जिससे व्यक्तिगत गरिमा को सामाजिक नैतिकता से ऊपर रखा गया।
- सबरीमाला मंदिर प्रवेश केस (2018):** महिलाओं के पूजा के अधिकार को मान्यता दी, धार्मिक परंपराओं से ऊपर संवैधानिक मूल्यों को रखा।
- जोसेफ शाइन केस (2018):** व्यभिचार (Adultery) कानून को खत्म कर लैंगिक समानता को बढ़ावा दिया।

भारत में संवैधानिक नैतिकता का महत्व

- व्यक्तिगत अधिकार बनाम सामाजिक परंपराएँ:** यह सुनिश्चित करता है कि कानून व्यक्तिगत स्वतंत्रता की रक्षा करें, जबकि सामाजिक मूल्यों का भी सम्मान किया जाए।
- बहुसंख्यकतावाद की रोकथाम:** यह अल्पसंख्यकों के अधिकारों की रक्षा करता है और लोकतांत्रिक संतुलन बनाए रखता है।
- समय के साथ विकास:** संवैधानिक नैतिकता न्यायिक फैसलों के माध्यम से LGBTQ+ अधिकार, लैंगिक न्याय और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता जैसे मुद्दों पर विस्तार पाती रही है।

आगे की राह

- न्यायिक स्पष्टता** को सुदृढ़ करना।
- संवैधानिक साक्षरता** को बढ़ावा देना।
- अधिकारों और परंपराओं के बीच **संतुलन** बनाए रखना।

निष्कर्ष

संवैधानिक नैतिकता भारत के लोकतांत्रिक विकास की आधारशिला है, जो परंपरा और प्रगति के बीच संतुलन बनाती है। जैसे-जैसे सामाजिक मूल्य बदलते हैं, न्यायपालिका और नीति-निर्माताओं को यह सुनिश्चित करना होगा कि संवैधानिक सिद्धांत न्याय, समानता और स्वतंत्रता के स्तंभ बने रहें।

फायदे (Pros)	नुकसान (Cons)
लोकतंत्र की रक्षा – अल्पसंख्यकों और कमजोर वर्गों के अधिकारों को सुनिश्चित करता है।	नैतिकता की अस्पष्टता – इसकी व्याख्या व्यक्तिपरक हो सकती है।
व्यक्तिगत स्वतंत्रता – स्वतंत्रता, समानता और न्याय को बढ़ावा देता है।	संविधान की गलत व्याख्या – निर्णय संविधान की मूल भावना से भटक सकते हैं।
न्यायिक निष्पक्षता – कानूनी फैसले पूर्वाग्रहों से मुक्त रहते हैं।	लोकतांत्रिक प्रक्रिया में हस्तक्षेप – न्यायपालिका विधायिका के कार्यों को प्रभावित कर सकती है।
सामाजिक सुधार – लैंगिक समानता, धार्मिक स्वतंत्रता, और LGBTQ+ अधिकारों को बढ़ावा देता है।	परंपराओं पर प्रभाव – यह सांस्कृतिक और धार्मिक परंपराओं से टकरा सकता है।
बहुसंख्यकतावाद की रोकथाम – अल्पसंख्यकों के अधिकारों की रक्षा करता है।	बहुसंख्यक समुदाय की उपेक्षा – बहुसंख्यकों की भावनाओं को नजरअंदाज किया जा सकता है।
संवैधानिक मूल्यों की सर्वोच्चता – संविधान को सर्वोच्च रखता है, जिससे स्थिरता बनी रहती है।	राजनीतिक दुरुपयोग की संभावना – इसका उपयोग राजनीतिक हितों के लिए किया जा सकता है।
विकसित समाज की ओर अग्रसर – समाज को प्रगतिशील और आधुनिक बनाता है।	संतुलन बनाना कठिन – परंपराओं, व्यक्तिगत अधिकारों और कानूनों के बीच सामंजस्य चुनौतीपूर्ण हो सकता है।

NEWS IN BRIEF

ऐलात की खाड़ी (अकाबा की खाड़ी)

समाचार: हालिया शोध से पता चला है कि ऐलात की खाड़ी (अकाबा की खाड़ी) में प्रवाल भित्तियों (कोरल रीफ) की वृद्धि रुक गई है, जिससे पारिस्थितिकीय चिंताएँ बढ़ गई हैं।

ऐलात की खाड़ी के बारे में

- **स्थिति:** उत्तरी लाल सागर, सीनाई और अरब प्रायद्वीप के बीच।
- **सीमावर्ती देश:** मिस्र, इज़राइल, जॉर्डन और सऊदी अरब।
- **गहराई:** 1,850 मीटर, जो स्वेज की खाड़ी (100 मीटर) से काफी गहरी है।
- **प्रवाल पारिस्थितिकी तंत्र:** विश्व के उत्तरीतम प्रवाल भित्तियों में से एक, जो समुद्री जैव विविधता के लिए महत्वपूर्ण है।



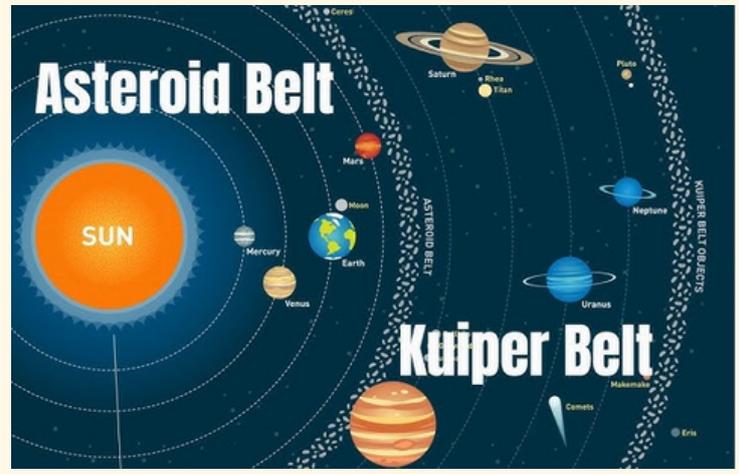
टोरिनो स्केल: क्षुद्रग्रह प्रभाव के खतरे का आकलन

टोरिनो स्केल एक वैज्ञानिक पैमाना है, जिसका **उपयोग यह मूल्यांकन** करने के लिए किया जाता है कि किसी **क्षुद्रग्रह या धूमकेतु** के पृथ्वी से टकराने की कितनी संभावना है और उसका संभावित प्रभाव कितना गंभीर हो सकता है।

विकास: इस स्केल को 1999 में खगोलशास्त्री **रिचर्ड पी. बिन्ज़ेल** ने विकसित किया था। इसका उद्देश्य वैज्ञानिकों और आम जनता को **निकट-पृथ्वी वस्तुओं (NEOs)** से जुड़े संभावित खतरों की गंभीरता को स्पष्ट रूप से समझाना है।

Torino Scale: Asteroid Impact Hazard Levels

Scale	Threat Level	Description	Color
0	No Hazard	No risk, or too small to cause harm.	White
1	Normal	Extremely low probability of impact.	Green
2-4	Meriting Attention	Requires further observation, low risk.	Yellow
5-7	Threatening Impact	Significant chance of regional/global damage.	Orange
8-10	Certain Impact	Collision inevitable, serious consequences.	Red



क्षुद्रग्रह YR24: 2032 में टकराव का खतरा या सुरक्षित गुज़र?

समाचार: टोरिनो स्केल क्षुद्रग्रह (एस्टेरॉयड) **खतरों को उनकी संभावित टक्कर** के आधार पर श्रेणीबद्ध करता है। **स्तर 3 की रैंकिंग** दर्शाती है कि टक्कर की संभावना 1% या उससे अधिक है, जिससे **सतर्कता आवश्यक होती है**, लेकिन तत्काल चिंता की जरूरत नहीं होती।

क्षुद्रग्रह YR24 के बारे में

- **वर्गीकरण:** निकट-पृथ्वी क्षुद्रग्रह (NEA), **अपोलो** समूह का हिस्सा।
- **आकार और गति:** अनुमानित रूप से **दर्जनों मीटर** चौड़ा, अंतरिक्ष में तेज़ी से गतिमान।
- **निकटतम गुज़र:** पृथ्वी के पास सुरक्षित दूरी से गुज़रा, **जिसे अंतरिक्ष एजेंसियों** द्वारा बारीकी से ट्रैक किया गया।

संभावित जोखिम और निगरानी

हालांकि YR24 वर्तमान में कोई **खतरा उत्पन्न नहीं करता**, वैज्ञानिक ऐसे पिंडों की निरंतर निगरानी पर जोर देते हैं। नासा का **प्लेनेटरी डिफेंस कोऑर्डिनेशन** ऑफिस और अन्य वैश्विक एजेंसियाँ **निकट-पृथ्वी वस्तुओं (NEOs)** पर नज़र रखती हैं ताकि संभावित प्रभाव जोखिमों का आकलन किया जा सके और भविष्य में बचाव रणनीतियाँ विकसित की जा सकें।

निष्कर्ष:

क्षुद्रग्रह YR24 का पृथ्वी के पास से गुज़रना हमें हमारे **गतिशील अंतरिक्ष** परिवेश की याद दिलाता है। ट्रैकिंग और **विक्षेपण तकनीकों** में प्रगति ग्रह की सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण बनी रहेगी, जिससे भविष्य में **संभावित क्षुद्रग्रह खतरों का प्रभाव** रोका जा सके।

रूस का mRNA-आधारित कैंसर वैक्सीन

समाचार: रूस ने एक mRNA-आधारित व्यक्तिगत कैंसर वैक्सीन विकसित की है, जिसे 2025 की शुरुआत तक निःशुल्क उपलब्ध कराने की योजना है।

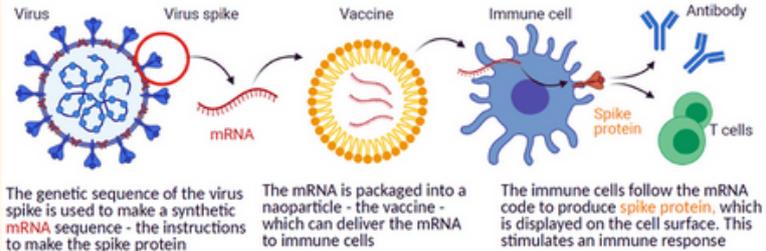
mRNA क्या है?

मैसेंजर RNA (mRNA) कोशिकाओं को विशिष्ट प्रोटीन बनाने के लिए DNA से आनुवंशिक निर्देश पहुंचाता है।

mRNA कैंसर वैक्सीन कैसे काम करती है?

- mRNA वैक्सीन प्रतिरक्षा प्रणाली को कैंसर कोशिकाओं की पहचान करने और उन पर हमला करने के लिए प्रशिक्षित करती है।
- यह ट्यूमर-विशिष्ट एंटीजन उत्पन्न करके कैंसर कोशिकाओं को लक्षित करती है।
- पारंपरिक उपचारों की तुलना में ये व्यक्तिगत रूप से अनुकूलित होती हैं, जिससे प्रत्येक रोगी के ट्यूमर के विशिष्ट संकेतकों पर प्रभावी तरीके से हमला किया जा सकता है।

How mRNA vaccines work



कैंसर वैक्सीन में वैश्विक प्रयास

- यूके: NHS ने BioNTech के साथ मिलकर कैंसर वैक्सीन लॉन्च पैड शुरू किया।
- अमेरिका: CureVac ग्लियोब्लास्टोमा के लिए एक mRNA वैक्सीन विकसित कर रहा है।

चीन का EAST रिएक्टर: भविष्य की फ्यूजन ऊर्जा

समाचार: चीन के एक्सपेरिमेंटल एडवांस्ड सुपरकंडक्टिंग टोकामक (EAST) ने 100 मिलियन डिग्री सेल्सियस प्लाज्मा तापमान को 1,066 सेकंड तक बनाए रखा, जिससे न्यूक्लियर फ्यूजन अनुसंधान में महत्वपूर्ण प्रगति हुई।

EAST और ITER के बारे में

- EAST इंटरनेशनल थर्मोन्यूक्लियर एक्सपेरिमेंटल रिएक्टर (ITER) के लिए एक परीक्षण प्लेटफॉर्म है, जिसमें भारत सहित छह देश शामिल हैं।
- टोकामक एक वैज्ञानिक उपकरण है जो चुंबकीय क्षेत्रों का उपयोग कर प्लाज्मा को नियंत्रित करता है, जिससे परमाणु संलयन संभव होता है।

न्यूक्लियर फ्यूजन क्या है?

- **प्रक्रिया:** ड्यूटेरियम (हाइड्रोजन-2) और ट्रिटियम (हाइड्रोजन-3) के संलयन से हीलियम बनता है, जिससे बड़ी मात्रा में ऊर्जा उत्पन्न होती है।
- **चुनौतियाँ:** अत्यधिक तापमान और दबाव की आवश्यकता होती है, जिससे तारों जैसी स्थितियाँ उत्पन्न करनी पड़ती हैं।

फ्यूजन ऊर्जा का महत्व

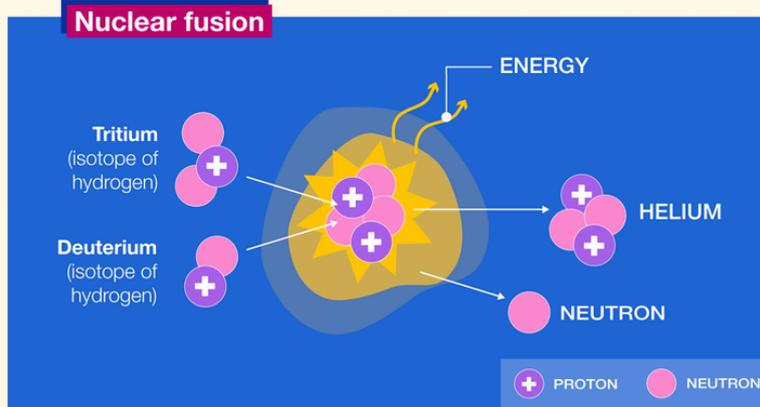
- **स्वच्छ और सतत ऊर्जा:** इसमें कोई ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन नहीं होता और न्यूनतम रेडियोधर्मी कचरा उत्पन्न होता है।
- **उच्च दक्षता:** फ्यूजन से परमाणु विखंडन की तुलना में चार गुना अधिक और जीवाश्म ईंधन से लाखों गुना अधिक ऊर्जा उत्पन्न होती है।
- **अधिक उपलब्ध ईंधन स्रोत:** समुद्री जल से ड्यूटेरियम और लिथियम से ट्रिटियम प्राप्त किया जा सकता है, जिससे दीर्घकालिक ऊर्जा आपूर्ति सुनिश्चित होती है।
- **सुरक्षित तकनीक:** इसमें अनियंत्रित प्रतिक्रिया या मेल्टडाउन का कोई खतरा नहीं होता।

भविष्य की संभावनाएँ

- EAST की यह उपलब्धि ITER परियोजना की प्रगति के लिए एक महत्वपूर्ण कदम है, हालांकि इसकी अनुमानित लागत लगभग 18 अरब यूरो है, जो एक चुनौती बनी हुई है।
- फ्यूजन ऊर्जा के अन्य संभावित विकल्पों में शामिल हैं:

- **स्टेलरेटर:** यह एक जटिल चुंबकीय डिज़ाइन पर आधारित प्रणाली है जो पारंपरिक टोकामक की तुलना में अधिक स्थिरता प्रदान कर सकती है।
- **लेजर फ्यूजन:** इसमें उच्च-शक्ति वाली लेजर किरणों का उपयोग कर ईंधन को संपीड़ित किया जाता है, जिससे फ्यूजन प्रक्रिया को शुरू किया जा सकता है।

निष्कर्ष: फ्यूजन ऊर्जा स्वच्छ, असीमित और सुरक्षित ऊर्जा का भविष्य है। यह दुनिया की बढ़ती ऊर्जा आवश्यकताओं को पूरा करने में क्रांतिकारी भूमिका निभा सकती है और सतत विकास के लक्ष्यों को प्राप्त करने में सहायक हो सकती है।



परंबिकुलम टाइगर रिजर्व: नई प्रजाति की खोज

समाचार: केरल के परंबिकुलम टाइगर रिजर्व में किए गए जीव विविधता सर्वेक्षण में 15 नई प्रजातियों की पहचान की गई, जिससे इसकी जैव विविधता सूची और समृद्ध हुई।

रिजर्व के बारे में:

- **स्थान:** पश्चिमी घाट (पलक्कड़ और त्रिशूर, केरल)
- **आदिवासी समुदाय:** कादर, मलासार, मुदुवर, माला मलासार
- **वनस्पति:** सागौन, नीम, चंदन, रोज़वुड; यहां कन्नियारा सागौन पाया जाता है, जिसे सबसे पुराना ज्ञात सागौन वृक्ष माना जाता है।

परंबिकुलम टाइगर रिजर्व: वन्यजीव और नई प्रजातियों की खोज

वन्यजीव: परंबिकुलम अपनी समृद्ध जैव विविधता के लिए प्रसिद्ध है और इसे "केरल की गौर राजधानी" कहा जाता है। यहां पाई जाने वाली स्थानिक प्रजातियों में परंबिकुलम मेंढक और गर्म सुरेंद्रनाथानी मछली शामिल हैं।

मुख्य सर्वेक्षण निष्कर्ष

- **पक्षी:** कुल 206 प्रजातियां दर्ज की गईं, जिनमें 7 नई प्रजातियां शामिल हैं, जैसे पेंटेड स्पेरफाल और भारतीय ग्रे हॉर्नबिल।
- **तितलियाँ:** कुल 273 प्रजातियां, जिनमें 5 नई प्रजातियां शामिल हैं, जैसे स्कार्स शॉट सिल्वरलाइन और पलनी डार्ट।
- **ओडोनेट्स (ड्रैगनफ्लाइ व डैमसेलफ्लाइ):** 3 नई ड्रैगनफ्लाइ प्रजातियां दर्ज की गईं, जिनमें ब्राउन डार्नर और पैराकीट डार्नर शामिल हैं।

परंबिकुलम जैव विविधता का एक प्रमुख केंद्र बना हुआ है और इसके संरक्षण प्रयासों में महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है।

अरावली सफारी पार्क परियोजना

प्रसंग: हरियाणा के गुरुग्राम और नूंह जिलों में फैला 3,858 हेक्टेयर का अरावली सफारी पार्क विश्व का सबसे बड़ा सफारी पार्क बनने की दिशा में कार्यरत है, जिसका उद्देश्य संरक्षण और पर्यटन को बढ़ावा देना है।

मुख्य विशेषताएँ

- **घोषणा:** 2022 में की गई
- **पहला चरण:** 2,500 एकड़ में फैला, जहां बाघ, सिंह और अन्य वन्यजीवों के लिए संलग्न क्षेत्र होंगे।
- **संरक्षण:** काले हिरण, गिद्ध और सॉफ्ट-शेल कछुओं जैसे संकटग्रस्त प्रजातियों पर ध्यान केंद्रित।
- **चिंताएँ:** पर्यावरणविद् और पूर्व IFS अधिकारी पारिस्थितिकीय जोखिमों को लेकर सचेत कर रहे हैं।
- **वर्तमान स्थिति:** अभी योजना और विकास प्रक्रिया में, विभिन्न हितधारकों के साथ विचार-विमर्श जारी।

संरक्षण, पर्यटन और पारिस्थितिकी के बीच संतुलन बनाना इस परियोजना की सफलता के लिए आवश्यक है।

DDoS हमला: एक बढ़ता साइबर खतरा

समाचार: कर्नाटक के कावेरी 2.0 पोर्टल को एक डीडीओएस (डिस्ट्रीब्यूटेड डिनायल-ऑफ-सर्विस) हमले के कारण गंभीर सर्वर आउटेज का सामना करना पड़ा।

डीडीओएस हमला क्या है?

- यह डिनायल-ऑफ-सर्विस (DoS) हमले का एक प्रकार है, जो सेवाओं को बाधित या बंद करने के लिए किया जाता है।
- इसका लक्ष्य वेबसाइट, वेब एप्लिकेशन, क्लाउड सेवाओं या अन्य ऑनलाइन संसाधनों को निष्क्रिय करना होता है।
- यह नकली पैकेट, अनावश्यक कनेक्शन अनुरोध या हानिकारक ट्रैफिक से सिस्टम को जाम कर देता है।
- इसमें कई स्रोतों से ट्रैफिक आता है, जिससे इसे "डिस्ट्रीब्यूटेड" कहा जाता है।
- **प्रभाव:** यह डेटा चोरी नहीं करता, लेकिन अन्य साइबर हमलों से ध्यान भटकाने के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है।

रोकथाम के उपाय

- **ट्रैफिक फ़िल्टरिंग,** बॉट डिटेक्शन, रेट लिमिटिंग, मजबूत प्रमाणीकरण और साइबर सुरक्षा एजेंसियों के साथ सहयोग।

प्रमुख डीडीओएस हमले

- **X (Twitter) (2024):** प्लेटफॉर्म पर बड़े पैमाने पर व्यवधान।
- **GitHub (2015):** चीन-आधारित बॉटनेट ने सेंसरशिप को दरकिनार करने के लिए हमला किया।

साइबर सुरक्षा उपायों को मजबूत करना ऐसे हमलों को रोकने के लिए आवश्यक है।

भारत-कतर संबंध रणनीतिक साझेदारी तक पहुंचे

समाचार: भारत और कतर ने अपने संबंधों को रणनीतिक साझेदारी तक बढ़ाने के लिए एक समझौते पर हस्ताक्षर किए, जो उनकी 50 वर्षों की कूटनीतिक साझेदारी का प्रतीक है।

मुख्य परिणाम:

- **मुक्त व्यापार समझौते** (FTA) की संभावनाओं पर चर्चा
- **दोहरे कराधान** से बचाव संधि पर हस्ताक्षर
- व्यापार को अगले पांच वर्षों में **दोगुना कर \$28** बिलियन तक पहुंचाने का लक्ष्य
- **इसाइल-फिलिस्तीन संघर्ष** पर चर्चा

भारत-कतर संबंध:

- **व्यापार:** कतर भारत का सबसे बड़ा एलएनजी और एलपीजी आपूर्तिकर्ता है (FY 2023-24 में 10.91 मिलियन मीट्रिक टन एलएनजी)।
- **रक्षा:** द्विपक्षीय नौसैनिक अभ्यास Zair-Al-Bahr, रक्षा सहयोग समझौता (2008, 2018 में नवीनीकृत)।
- **प्रवासी समुदाय:** 7 लाख से अधिक भारतीय प्रवासी कतर की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं।

चुनौतियाँ:

- **मध्य पूर्व में जारी** संघर्ष ऊर्जा सुरक्षा और व्यापार को प्रभावित कर सकता है।
- **भारत-GCC मुक्त व्यापार समझौते** में देरी, जीसीसी की नीतिगत अस्थिरता के कारण।

आगे का रास्ता: भारत खाड़ी क्षेत्र में अपनी राजनीतिक, **आर्थिक और सुरक्षा** साझेदारी को और मजबूत करना चाहता है, जिससे क्षेत्र में अपनी दीर्घकालिक उपस्थिति और प्रभाव बढ़ा सके।

भारत टेक्स 2025: भारत के वस्त्र उद्योग को बढ़ावा

समाचार: भारत टेक्स 2025, भारत का सबसे बड़ा **वैश्विक वस्त्र आयोजन**, नई दिल्ली में आयोजित हुआ, जिसमें नवाचारों और व्यापारिक संभावनाओं का प्रदर्शन किया गया।

मुख्य बिंदु

- **दृष्टिकोण:** "फार्म से फाइबर, फैब्रिक, फैशन और विदेशी बाजारों तक"
- **भागीदारी:** 120+ देशों से 5,000+ प्रदर्शक, 1,20,000+ आगंतुक
- **भारत का वस्त्र उद्योग**
 - **वैश्विक स्तर** पर छठा सबसे बड़ा निर्यातक, भारत के कुल निर्यात में 8.21% योगदान (2023-24)
 - **4.5 करोड़** से अधिक लोगों को रोजगार प्रदान करता है
 - अमेरिका और यूरोपीय संघ के बाजारों में **47% वस्त्र निर्यात**

सरकारी पहल

- **पीएम मित्रा पार्क:** \$10 अरब निवेश के साथ 7 मेगा टेक्सटाइल पार्क
- **पीएलआई योजना:** एमएमएफ और तकनीकी वस्त्रों के लिए ₹10,683 करोड़ की प्रोत्साहन योजना
- **समर्थ:** वस्त्र श्रमिकों के कौशल विकास हेतु योजना
- **एनएचडीपी:** हथकरघा बुनकरों के लिए सहायता कार्यक्रम

चुनौतियाँ

- उच्च **कच्चे माल** की लागत और पुरानी तकनीक
- चीन, वियतनाम, **बांग्लादेश से कड़ी** वैश्विक प्रतिस्पर्धा
- पर्यावरणीय और **नियामकीय बाधाएँ**
- **कुशल श्रमिकों** की कमी और आपूर्ति श्रृंखला में रुकावटें

आगे का रास्ता

- **तकनीकी उन्नयन** और सतत उत्पादन पद्धतियाँ
- **कौशल विकास** और वैश्विक बाजारों में विस्तार
- **कच्चे माल** की आपूर्ति को सुनिश्चित करना

समुद्रायण परियोजना: गहन महासागर अन्वेषण

समाचार: समुद्रायण परियोजना के तहत **विकसित मत्स्य-6000** ने सफलतापूर्वक वेद परीक्षण पूरा किया।

समुद्रायण परियोजना

- **डीप ओशन मिशन** का हिस्सा, जिसका उद्देश्य गहरे समुद्र की खोज करना है।
- **मत्स्य-6000:** चौथी पीढ़ी की मानवयुक्त पनडुब्बी, जो 6,000 मीटर की गहराई तक गोता लगाने में सक्षम है। इसमें **तीन चालक दल** के सदस्य वैज्ञानिक उपकरणों के साथ जाएंगे।

डीप ओशन मिशन

- 2021 में पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय द्वारा लॉन्च किया गया।
- हिंद महासागर में **जैविक एवं अजैविक** संसाधनों की खोज के लिए बहु-मंत्रालयी पहल।
- भारत की ब्लू **इकोनॉमी रणनीति** को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

सिमिलिपाल टाइगर रिजर्व में ट्रेलगाई एआई

संदर्भ: सिमिलिपाल टाइगर रिजर्व ने शिकारियों का पता लगाने के लिए **ट्रेलगाई एआई प्रणाली** के तहत 100-150 एआई-सक्षम कैमरे तैनात किए हैं।

ट्रेलगाई एआई के बारे में

- **विकासकर्ता:** नाइटजार टेक्नोलॉजीज द्वारा वन्यजीव निगरानी के लिए विकसित।
- **विशेषताएँ:** छोटे आकार के कैमरे, 6-12 महीने की बैटरी लाइफ, वास्तविक समय अलर्ट, और मनुष्यों, जानवरों एवं वाहनों की एआई-आधारित पहचान।
- **महत्व:** शिकार विरोधी प्रयासों को सशक्त बनाता है; कान्हा टाइगर रिजर्व और दुधवा नेशनल पार्क में भी उपयोग किया जाता है।

सिमिलिपाल टाइगर रिजर्व

- **स्थिति:** मयूरभंज, ओडिशा में स्थित; पहाड़ी भूभाग और घास के मैदानों से घिरा।
- **विशेषता:** भारत में मेलानिस्टिक (काले) बाघों का एकमात्र ज्ञात निवास स्थान।



छत्रपति शिवाजी महाराज जयंती

समाचार: प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने छत्रपति शिवाजी महाराज की जयंती पर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की।

शिवाजी महाराज के बारे में

- **जन्म:** 1630, महाराष्ट्र।
- **संस्थापक:** मराठा साम्राज्य, सैन्य रणनीति और सुशासन के लिए प्रसिद्ध।
- **प्रेरणा स्रोत:** संत तुकाराम, ज्ञानेश्वर और रामदास।

राज्याभिषेक और प्रशासन

- **1674:** रायगढ़ में राज्याभिषेक, 'राज्याभिषेक युग' की शुरुआत।
- **प्रशासन:** अष्टप्रधान मंडल (आठ मंत्रियों की परिषद) की स्थापना।
- **राजस्व प्रणाली:** मलिक अंबर के मॉडल को अपनाया, बिचौलियों को हटाया, तथा चौथ (25% कर) और सरदेशमुखी (9-10% कर) लागू किया।

सैन्य शक्ति और विरासत

- **मजबूत सेना, कुशल गुप्तचर तंत्र**, और भारत की पहली नौसेना का गठन किया, जिससे उन्हें "भारतीय नौसेना के जनक" की उपाधि मिली।
- उनके सुशासन ने **मराठा साम्राज्य की नींव रखी**, जिससे भारत के राजनीतिक और प्रशासनिक इतिहास को नई दिशा मिली।

वैश्विक समुद्री बर्फ का स्तर अब तक के न्यूनतम स्तर पर

समाचार: अमेरिकी राष्ट्रीय हिम और बर्फ डेटा केंद्र (NSIDC) की रिपोर्ट के अनुसार, फरवरी 2025 में वैश्विक समुद्री बर्फ का **विस्तार घटकर 15.76 मिलियन वर्ग किलोमीटर** के रिकॉर्ड न्यूनतम स्तर पर पहुंच गया।

समुद्री बर्फ क्या है?

- **ध्रुवीय क्षेत्रों में तैरती हुई बर्फ**, जो सर्दियों में बढ़ती और गर्मियों में पिघलती है।
- पृथ्वी को ठंडा रखने और महासागर के **तापमान को नियंत्रित** करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

बर्फ पिघलने के कारण

- **बढ़ते वैश्विक तापमान** – आर्कटिक क्षेत्र वैश्विक औसत से 4 गुना तेजी से गर्म हो रहा है।
- **आइस-अल्बेडो प्रभाव** – कम बर्फ → अधिक गर्मी अवशोषण → तेजी से पिघलना।
- **तेज हवाएं और तूफान** – आर्कटिक में तूफान बर्फ को तोड़ते हैं, अंटार्कटिका में बर्फ अधिक गतिशील हो रही है।

प्रभाव

- **जलवायु परिवर्तन तेज होगा** – अधिक गर्मी अवशोषण के कारण तापमान और बढ़ेगा।
- **महासागरीय धाराओं में बाधा** – पिघलती बर्फ से मिठे पानी की मात्रा बढ़ेगी, जिससे महासागर की धाराएं धीमी पड़ेंगी।
- **समुद्र स्तर में वृद्धि** – खुले ग्लेशियर और बर्फ की चादरें तेजी से पिघलेंगी।
- **पारिस्थितिकी तंत्र पर संकट** – क्रिल, सील और ध्रुवीय भालुओं जैसी प्रजातियां खतरे में पड़ सकती हैं।

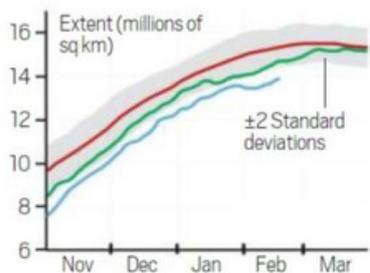
आगे की राह

- **पेरिस समझौते** का पालन कर तापमान वृद्धि को 1.5°C तक सीमित करना।
- **उन्नत सैटेलाइट** मॉनिटरिंग से ध्रुवीय बर्फ में हो रहे बदलावों को ट्रैक करना।
- **समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र** की सुरक्षा के लिए वैश्विक स्तर पर कठोर नियम लागू करना।
- **ध्रुवीय क्षेत्रों में** औद्योगिक गतिविधियों को नियंत्रित करना।

यह रिकॉर्ड **न्यूनतम समुद्री बर्फ स्तर दर्शाता है** कि जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को रोकने के लिए त्वरित और ठोस कदम उठाने की आवश्यकता है।

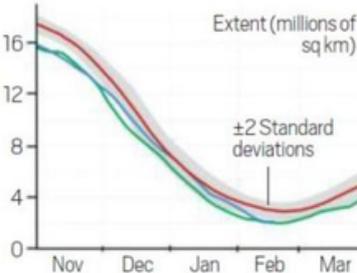
ARCTIC SEA ICE EXTENT

■ 2024-25 ■ 2011-12
■ 1981-2010 Average



ANTARCTIC SEA ICE EXTENT

■ 2024-25 ■ 2023-24
■ 1981-2010 Average



अफ्रीकी चीतों का भारत में पुनर्वास: एक मूल्यांकन

समाचार: सेंटर फॉर वाइल्डलाइफ स्टडीज (CWS) की एक रिपोर्ट में अफ्रीकी चीतों को भारत में **स्थानांतरित करने को लेकर नैतिक, पारिस्थितिक और व्यवहारगत चिंताओं** को उजागर किया गया है।

परियोजना चीता: एक दृष्टिकोण

- **परियोजना की शुरुआत:** भारत में विलुप्त हो चुके चीतों को पुनर्स्थापित करने के लिए 2022 में **नामीबिया से 8 और 2023 में दक्षिण अफ्रीका से 12 चीते** कुनो राष्ट्रीय उद्यान (मध्य प्रदेश) में लाए गए।
- **योजना:** अगले कुछ वर्षों में **12 चीते प्रतिवर्ष** लाने का लक्ष्य, ताकि एक स्थायी आबादी विकसित की जा सके।

मुख्य चुनौतियाँ

- **उच्च तनाव और मृत्यु दर:** चीतों को 90 से अधिक बार बेहोश करना पड़ा, जिससे उनकी **निरंतर पशु चिकित्सा देखभाल** की आवश्यकता हुई। मृत्यु दर 40-50% तक पहुँच गई (जबकि अपेक्षित दर मात्र 15% थी)।
- **संरक्षण संबंधी जोखिम:** अफ्रीकी चीता की **वैश्विक जनसंख्या** पहले ही संकट में है (वर्तमान में केवल ~6,500 बचे हैं)।
- **दीर्घकालिक व्यवहार्यता:** लगातार **आयात न केवल** अव्यावहारिक है, बल्कि नैतिक रूप से भी विवादास्पद माना जा रहा है।

भारत में चीतों का विलुप्त होना

- 1952 में अत्यधिक शिकार, **प्राकृतिक आवास** की हानि और शिकार योग्य जीवों की कमी के कारण भारत में चीते आधिकारिक रूप से विलुप्त घोषित किए गए।
- कभी पूरे भारतीय उपमहाद्वीप में फैले हुए **चीते अब पाकिस्तान, अफगानिस्तान और इजराइल सहित 14 अन्य देशों से भी समाप्त हो चुके हैं।**

संभावित समाधान और सुझाव

- **न्यायसंगत संरक्षण नीति:** स्थानीय **समुदायों और पारंपरिक ज्ञान** प्रणालियों को संरक्षण प्रयासों में शामिल किया जाए।
- **सतत सह-अस्तित्व:** वन्यजीवों के पुनर्वास से **अधिक प्राकृतिक आवासों** की सुरक्षा और पारिस्थितिक तंत्र की पुनर्बहाली को प्राथमिकता दी जाए।
- **वैकल्पिक रणनीति:** अफ्रीकी चीतों के स्थानांतरण के बजाय भारत में विलुप्त हो चुके एशियाई चीतों को संरक्षित करने और उनकी **क्लोनिंग या डी-एक्सटिंक्शन (De-Extinction)** जैसी वैज्ञानिक विधियों पर ध्यान दिया जाए।

चीता पुनर्स्थापन योजना को प्रभावी और दीर्घकालिक रूप से सफल बनाने के लिए एक अधिक **समावेशी, वैज्ञानिक और नैतिक दृष्टिकोण** अपनाने की आवश्यकता है।

भारत-अर्जेंटीना सहयोग और लिथियम अन्वेषण

प्रसंग: भारत और अर्जेंटीना खनन सहयोग को बढ़ा रहे हैं, विशेष रूप से इलेक्ट्रिक वाहन (EV) बैटरियों और नवीकरणीय ऊर्जा के लिए लिथियम अन्वेषण पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं।

मुख्य बिंदु

अर्जेंटीना के लिथियम भंडार: अर्जेंटीना, बोलीविया और चिली लिथियम त्रिभुज (Lithium Triangle) का हिस्सा है, जहाँ दुनिया के 58% लिथियम भंडार स्थित हैं। भारत की भागीदारी

- **खनिज विदेश इंडिया लिमिटेड (KABIL)** और Greenko अर्जेंटीना में लिथियम खनन के अवसरों की तलाश कर रहे हैं।
- **भारत का अर्जेंटीना के खनन क्षेत्र में निवेश बढ़ रहा है।**



• लिथियम के बारे में

- यह एक चाँदी-सफेद, अत्यधिक प्रतिक्रियाशील धातु है, जिसका उपयोग लिथियम-आयन बैटरियों में किया जाता है।
- मुख्य उत्पादक देश: ऑस्ट्रेलिया, चिली और अर्जेंटीना वैश्विक लिथियम उत्पादन में अग्रणी हैं।

भारत के लिए महत्व

- महत्वपूर्ण खनिज सुरक्षा को मजबूत करता है, जो भारत की EV और नवीकरणीय ऊर्जा रणनीति के लिए आवश्यक है।

- लिथियम त्रिभुज देशों के साथ भारत के राजनयिक और आर्थिक संबंधों को बढ़ाता है।

भारत-अर्जेंटीना सहयोग, भविष्य में लिथियम संसाधनों की उपलब्धता सुनिश्चित करने और स्वच्छ ऊर्जा लक्ष्यों को प्राप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

असम में अंतर्देशीय जलमार्ग टर्मिनल (IWT)

समाचार: केंद्रीय बंदरगाह, जहाजरानी और जलमार्ग मंत्री ने ब्रह्मपुत्र नदी पर स्थित असम के जोगीघोषा में एक अंतर्देशीय जलमार्ग टर्मिनल (IWT) का उद्घाटन किया।

मुख्य बिंदु

रणनीतिक व्यापार केंद्र:

- भारत-बांग्लादेश व्यापार को भारतमाला कार्यक्रम के तहत बढ़ावा मिलेगा।
- भूटान और बांग्लादेश के साथ त्रिपक्षीय व्यापार को मजबूती मिलेगी।

अंतर्देशीय जलमार्गों में वृद्धि:

- चालू राष्ट्रीय जलमार्गों में 767% की वृद्धि।
- माल ढुलाई क्षमता में 727% की बढ़ोतरी।
- बहु-मोडल टर्मिनलों में 62% की वृद्धि।
- माल यातायात 18 मिलियन टन (2014) से बढ़कर 133 मिलियन टन (FY 2023-24) हो गया।



कोरोनल होल और उनका प्रभाव

समाचार:

भारतीय खगोल भौतिकी संस्थान (Indian Institute of Astrophysics) के एक अध्ययन में सौर कोरोनाल होल की तापीय और चुंबकीय संरचना का अनुमान लगाया गया है।

मुख्य बिंदु

कोरोनल होल क्या हैं?

- 1970 के दशक में X-ray उपग्रहों द्वारा खोजे गए।
- सौर कोरोना में दिखने वाले गहरे धब्बे, जो EUV और X-ray छवियों में नजर आते हैं।
- तेज सौर हवाएँ (450-800 किमी/सेकंड) अंतरिक्ष में उत्सर्जित करते हैं।

अंतरिक्ष मौसम और जलवायु पर प्रभाव:

- भू-चुंबकीय गड़बड़ी उत्पन्न कर सैटेलाइट, GPS और पावर ग्रिड को प्रभावित करते हैं।
- पृथ्वी के आयनमंडल में रेडियो तरंगों के प्रसार को बाधित करते हैं।
- इनके विकिरण प्रभावों को भारतीय मानसून परिवर्तनशीलता से जोड़ा गया है।

Majorana 1: माइक्रोसॉफ्ट का क्वांटम चिप

समाचार: माइक्रोसॉफ्ट ने Majorana 1 लॉन्च किया है, जो टोपोलॉजिकल क्यूबिट्स का उपयोग कर क्वांटम कंप्यूटिंग में क्रांतिकारी सुधार लाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। यह चिप अधिक स्थिरता प्रदान करती है और त्रुटियों को कम करने में सक्षम है।

क्वांटम कंप्यूटिंग: एक परिचय

- पारंपरिक कंप्यूटर बिट्स (0 और 1) का उपयोग करते हैं, जबकि क्वांटम कंप्यूटर सुपरपोजिशन, एंटीगलमेंट और क्वांटम इंटरफेरेंस पर आधारित क्यूबिट्स का उपयोग करते हैं।
- यह अत्यधिक जटिल समस्याओं को तेज़ी से हल कर सकता है।
- संभावित उपयोग: क्रिप्टोग्राफी, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI), नई दवाओं की खोज, वित्तीय मॉडलिंग, और जलवायु पूर्वानुमान।

Majorana 1 की विशेषताएँ

- टोपोकंडक्टर (Topoconductors) का उपयोग कर टोपोलॉजिकल क्यूबिट्स विकसित किए गए हैं, जो पारंपरिक क्यूबिट्स की तुलना में अधिक स्थिर हैं।
- इंडियम आर्सेनाइड (Indium Arsenide) (अर्धचालक) और एल्यूमिनियम (Aluminum) (अधिसंवाहक) से निर्मित, जो त्रुटि-मुक्त क्वांटम संचालन को सक्षम बनाता है।

क्वांटम कंप्यूटिंग की चुनौतियाँ

- हार्डवेयर सीमाएँ: क्वांटम कोहेरेंस बनाए रखना कठिन है।
- त्रुटि सुधार: क्यूबिट्स में उच्च त्रुटियाँ होती हैं।
- स्केलेबिलिटी: बड़े पैमाने पर क्वांटम सिस्टम विकसित करना महंगा और जटिल है।
- सुरक्षा जोखिम: क्लासिकल एन्क्रिप्शन तकनीकों को खतरों में डाल सकता है।

भारत की क्वांटम पहल

- नेशनल क्वांटम मिशन (NQM) (2023-31): ₹6003.65 करोड़ का निवेश क्वांटम अनुसंधान और विकास के लिए।
- NM-QTA (2020): ₹8,000 करोड़ का फंड क्वांटम टेक्नोलॉजी अनुप्रयोगों के लिए।
- संबंधित संस्थान: IISc, IITs, DRDO, और C-DAC, जो क्वांटम सुरक्षा, कंप्यूटिंग और क्रिप्टोग्राफी पर काम कर रहे हैं।



प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1: भारत की हिंद महासागर क्षेत्र (IOR) में रणनीतिक भूमिका के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. भारत IOR का एकमात्र देश है जहां पूर्ण रूप से संचालन योग्य त्रि-सेवा सैन्य कमान है।
2. 'सागर' (SAGAR) पहल विशेष रूप से हिंद महासागर तटीय देशों के साथ सैन्य सुरक्षा सहयोग पर केंद्रित है।
3. अंडमान और निकोबार द्वीप समूह भारत को मलक्का जलडमरूमध्य जैसे प्रमुख चोकप्वाइंट्स पर रणनीतिक नियंत्रण प्रदान करते हैं।
4. चीन की बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (BRI) का हिंद महासागर क्षेत्र में कोई महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं है।

उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?

- (A) केवल 1 और 3
(B) केवल 2 और 4
(C) केवल 1, 2 और 3
(D) केवल 1, 3 और 4

प्रश्न 2: निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. 73^{वें} संवैधानिक संशोधन अधिनियम के तहत पंचायती राज संस्थाओं को ग्यारहवीं अनुसूची में सूचीबद्ध विषयों पर आर्थिक विकास योजनाएँ तैयार करने और लागू करने का अधिकार प्राप्त है।
2. पंचायती राज संस्थाओं को शक्तियों और वित्तीय संसाधनों का हस्तांतरण राज्यों की विधानसभाओं द्वारा तय किया जाता है, जिससे इसमें राज्यों के बीच भिन्नता होती है।
3. पंचायतों को कर लगाने की कोई शक्ति नहीं होती और वे पूरी तरह से राज्य व केंद्र सरकार की अनुदान राशि पर निर्भर होती हैं।

उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?

- (A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

प्रश्न 3: निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. RuTAGE स्मार्ट विलेज सेंटर ग्रामीण तकनीक के अनुकूलन और प्रचार पर ध्यान केंद्रित करते हैं।
2. ये केंद्र राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम (NREGA) के तहत स्थापित किए गए हैं।
3. इनका उद्देश्य अनुसंधान संस्थानों और ग्रामीण समुदायों के बीच की खाई को पाटना है।

उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?

- (A) केवल 1 और 2
(B) केवल 1 और 3
(C) केवल 2 और 3
(D) 1, 2 और 3

प्रश्न 4: निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. पीटलैंड (Peatlands) विश्व के सभी वनों की तुलना में अधिक कार्बन संग्रहीत करते हैं।
2. ये केवल उष्णकटिबंधीय (tropical) क्षेत्रों में पाए जाते हैं और समशीतोष्ण (temperate) जलवायु में अनुपस्थित होते हैं।
3. पीटलैंड के जलनिकासी और क्षरण से बड़ी मात्रा में CO₂ वायुमंडल में उत्सर्जित होता है।

उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?

- (A) केवल 1 और 2
(B) केवल 1 और 3
(C) केवल 2 और 3
(D) 1, 2 और 3

प्रश्न 5: निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. दिल्ली भूकंपीय क्षेत्र IV (Seismic Zone IV) में स्थित है, जो भूकंप के उच्च जोखिम को दर्शाता है।
2. हिमालयी टेक्टोनिक गतिविधि का दिल्ली में भूकंपों पर कोई प्रत्यक्ष प्रभाव नहीं पड़ता।
3. दिल्ली की जलोढ़ मिट्टी संरचना के कारण, भूकंप के दौरान द्रवीकरण (Liquefaction) एक प्रमुख चिंता का विषय है।

उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?

- (A) केवल 1 और 2
(B) केवल 1 और 3
(C) केवल 2 और 3
(D) 1, 2 और 3

प्रश्न 6: निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. भारत और चीन दोनों क्वाड (Quad) सुरक्षा संवाद के सदस्य हैं।
2. वास्तविक नियंत्रण रेखा (LAC) भारत और चीन के बीच वास्तविक सीमा के रूप में कार्य करती है।
3. चीन द्विपक्षीय व्यापार के संदर्भ में भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार है।

उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?

- (A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

प्रश्न 7: निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. संवैधानिक नैतिकता (Constitutional Morality) का अर्थ संविधान की भावना के बजाय केवल उसके अक्षर का पालन करना है।
2. डॉ. भीमराव अंबेडकर ने संवैधानिक नैतिकता को भारत के लोकतांत्रिक ढांचे के लिए आवश्यक बताया था।
3. भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने मौलिक अधिकारों से संबंधित ऐतिहासिक फैसलों में संवैधानिक नैतिकता की अवधारणा को स्वीकार किया है।

उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?

- (A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

प्रश्न 8: निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. टोरीनी स्केल (Torino Scale) का उपयोग पृथ्वी के निकट वस्तुओं (NEOs) के प्रभावी खतरे का आकलन करने के लिए किया जाता है, जिसकी रेटिंग 0 (कोई जोखिम नहीं) से 10 (निश्चित विनाशकारी टकराव) तक होती है।
2. क्षुद्रग्रह YR24 को टोरीनी स्केल पर स्तर 10 के खतरे के रूप में वर्गीकृत किया गया है, जिसका 2032 में पृथ्वी से टकराने की संभावना है।
3. NASA और ESA खतरनाक क्षुद्रग्रहों की निगरानी दूरबीनों और DART जैसी ग्रह रक्षा (planetary defense) मिशनों के माध्यम से करते हैं।

उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?

- (A) केवल 1 और 3
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 2
(D) 1, 2 और 3

प्रश्न 9: निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. चीन ने दुनिया का पहला mRNA-आधारित कैंसर वैक्सीन विकसित किया है, जो सीधे कैंसर कोशिकाओं को मारने का कार्य करता है।
2. कीमोथेरेपी के विपरीत, mRNA कैंसर वैक्सीन से कोई दुष्प्रभाव नहीं होते।
3. COVID-19 टीकों में व्यापक रूप से उपयोग की जाने वाली mRNA तकनीक अब कैंसर इम्यूनोथेरेपी के लिए भी विकसित की जा रही है।

उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?

- (A) केवल 2 और 3
(B) केवल 3
(C) केवल 1 और 2
(D) 1, 2 और 3

प्रश्न 10: निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. चीन का EAST (Experimental Advanced Superconducting Tokamak) रिएक्टर दुनिया का पहला वाणिज्यिक परमाणु संलयन (nuclear fusion) ऊर्जा संयंत्र है।
2. संलयन ऊर्जा (Fusion Energy) परमाणु नाभिकों के संयोजन से उत्पन्न होती है, जो बिना ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन के विशाल ऊर्जा मुक्त करती है।
3. EAST रिएक्टर का उद्देश्य अंतर्राष्ट्रीय थर्मोन्यूक्लियर प्रायोगिक रिएक्टर (ITER) परियोजना का समर्थन करना है।

उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?

- (A) केवल 1 और 3
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 2
(D) 1, 2 और 3

प्रश्न 11: निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. एक DDoS (Distributed Denial-of-Service) हमला लक्षित सर्वरों से संवेदनशील डेटा सीधे चुराता है।
2. DDoS हमले नेटवर्क या वेबसाइट को अत्यधिक ट्रैफिक से भरकर उसे ठप कर देते हैं।
3. बड़े पैमाने पर DDoS हमलों को अंजाम देने के लिए अक्सर बॉटनेट्स (Botnets) का उपयोग किया जाता है।

उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?

- (A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

प्रश्न 12: निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. समुद्रयान (Samudrayan) परियोजना भारत का पहला मानवयुक्त अंतरिक्ष मिशन है, जिसे समुद्री जैव विविधता का अध्ययन करने के लिए डिजाइन किया गया है।
2. इस परियोजना का लक्ष्य Matsya 6000 पनडुब्बी (submersible) का उपयोग करके मानवों को 6000 मीटर की गहराई तक भेजना है।
3. यह परियोजना भारत के डीप ओशन मिशन (Deep Ocean Mission) का हिस्सा है, जो समुद्री संसाधनों के अन्वेषण और गहरे समुद्री अनुसंधान पर केंद्रित है।

उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?

- (A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

प्रश्न 13: निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. TrailGuard AI एक उपग्रह-आधारित ट्रैकिंग प्रणाली है, जिसे सिमलीपाल रिजर्व में पक्षी प्रवासन की निगरानी के लिए उपयोग किया जाता है।
2. यह कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) संचालित कैमरों का उपयोग कर शिकारियों का पता लगाता है और वन अधिकारियों को वास्तविक समय में सतर्क करता है।
3. सिमलीपाल रिजर्व, जो ओडिशा में स्थित है, बाघों और अन्य वन्यजीवों के लिए एक महत्वपूर्ण निवास स्थान है।

उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?

- (A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

प्रश्न 14: निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. भारत ने विशेष रूप से बोलीविया के साथ एक लिथियम अन्वेषण समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं, जिसमें अर्जेंटीना और चिली को शामिल नहीं किया गया है।
2. 'लिथियम ट्रायंगल' अर्जेंटीना, बोलीविया और चिली को संदर्भित करता है, जिनके पास दुनिया के अधिकांश लिथियम भंडार हैं।
3. लिथियम इलेक्ट्रिक वाहनों और नवीकरणीय ऊर्जा भंडारण के लिए उपयोग की जाने वाली रिचार्जबल बैटरियों का एक प्रमुख घटक है।

उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?

- (A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

1. भारत में पंचायती राज संस्थाओं (PRIs) को शक्तियों के हस्तांतरण (devolution) की प्रगति और चुनौतियों पर चर्चा करें। स्थानीय शासन को बेहतर बनाने के लिए वित्तीय विकेंद्रीकरण (fiscal decentralization) को कैसे मजबूत किया जा सकता है?
2. भारत में पर्यावरणीय सक्रियता (environmental activism) की यात्रा चिपको आंदोलन से लेकर आधुनिक शहरी आंदोलनों तक कैसे विकसित हुई है? शहरी स्थिरता (urban sustainability) में नागरिक भागीदारी की क्या भूमिका है?
3. भारत में रोजगार का सार्वजनिक क्षेत्र से निजी क्षेत्र की ओर स्थानांतरण (employment shift) किस प्रकार हुआ है? इस परिवर्तन के प्रमुख कारक क्या हैं, और यह नौकरी की सुरक्षा (job security) और श्रम अधिकारों (labor rights) को कैसे प्रभावित करता है?
4. वैश्विक कार्बन अनुशोषण (carbon sequestration) में पीटलैंड्स (peatlands) का क्या महत्व है? पीटलैंड पारिस्थितिकी तंत्र (ecosystems) के लिए खतरे क्या हैं, और उनके संरक्षण के लिए कौन-से उपाय किए जा सकते हैं?
5. बढ़ती डिजिटल सेंसरशिप (digital censorship) के संदर्भ में, भारत मुक्त अभिव्यक्ति (free speech) और राष्ट्रीय सुरक्षा (national security) के बीच संतुलन कैसे बना सकता है? उपयुक्त उदाहरणों सहित चर्चा करें।
6. भारत-चीन संबंध (India-China relations) सहयोग और टकराव (cooperation and confrontation) के बीच उतार-चढ़ाव वाले रहे हैं। द्विपक्षीय संबंधों को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारकों का विश्लेषण करें और स्थिरता के लिए एक रोडमैप सुझाएं।
7. भारत-चीन संबंधों में सीमा विवाद (border tensions) और आर्थिक सहयोग (economic engagements) एक साथ कैसे मौजूद हैं? भविष्य की कूटनीति (diplomacy) के लिए क्या चुनौतियाँ और अवसर हैं?
8. संवैधानिक नैतिकता (constitutional morality) क्या होती है? यह बहुसंख्यवाद (majoritarianism) और राजनीतिक तात्कालिकता (political expediency) पर संवैधानिक मूल्यों की सर्वोच्चता कैसे सुनिश्चित करती है?
9. भारत में निजीकरण (privatization) और गिग अर्थव्यवस्था (gig economy) के बढ़ते प्रभाव से रोजगार के स्वरूप (employment patterns) पर क्या प्रभाव पड़ा है? नौकरी की स्थिरता (job stability) और सामाजिक सुरक्षा (social security) सुनिश्चित करने के लिए कौन-सी नीतिगत पहल (policy measures) आवश्यक हैं?
10. भारत में संवैधानिक नैतिकता (constitutional morality) समकालीन सामाजिक-राजनीतिक चुनौतियों का समाधान करने में कैसे सहायक है? हाल के न्यायिक निर्णयों (judicial verdicts) के उदाहरणों के साथ व्याख्या करें।

UPSC & UPPSC**FOUNDATION
BATCH - 2026**

Complete GS Coverage
Including Current Affairs



Experienced faculty
Best in their field



Medium
Both in Hindi & English



3 Day- Free Demo Classes
Judge for yourself



3rd March **Rs. 74,999/-**

Early Bird Discount @ 20%

To Register

Scan the QR and
say Hi



Or WhatsApp US
@ 99967-72725



Faculty Members

Dharam Sir (12 yrs exp.)
Avi Pratap Sir (10 yr exp.)
Sumit Sir (Ex-Vajiram IAS)
Rajkumar Sir (Ex-Vajiram IAS)

Scan to message us on Whatsapp



999672725
7879105480

wisdomias.in@gmail.com

wisdomias.in

Wisdom IAS, above Bachapan
Gallery, Rakesh Marg, Ghaziabad

Wisdom IAS, Rakesh Marg, Ghaziabad